हिमाचल की प्रगति एवं संस्कृति का दर्पण

गिरिराज

साप्ताहिक

घर बैठे गिरिराज पाइये

आप गिरिराज के आजीवन ग्राहक बनना चाहते हैं तो 1500 **रुपये** का बैंक ड्राफ्ट **निदेशक, सूचना एवं जन सम्पर्क, शिमला**-2 के पक्ष में बनाएं व इसे गिरिराज कार्यालय में भेजें। यदि आप वार्षिक सदस्य बनना चाहते हैं तो 140 रुपये का बैंक ड्राफ्ट या एम. ओ. **सम्पादक, गिरिराज साप्ताहिक, शिमला**-171005 के नाम से भेजें। पते में पिन कोड एवं दूरभाष या मोबाइल नं. लिखना न भूलें।

डाक पंजीकरण संख्या

एच.पी./42/एस.एम.एल. 2009-11

साप्ताहिक आर.एन.आई. 32195/78

इस अंक में

कृषि/बागबानी/विकास...5, सर्व शिक्षा अभियान 6-7, साहित्य...8, महिला/ बाल जगत/स्वास्थ्य ...9, पहाड़ी पृष्ठ...10

वर्ष 34 अंक 16 शिमला, 18–24 जनवरी, 2012 हर बुधवार को प्रकाशित मूल्य : एक प्रति 3.00 रुपये वार्षिक 140 रुपये आजीवन 1500 रुपये website : himachalpr.gov.in/giriraj.asp

भाखड़ा ब्यास प्रबंधन बोर्ड बारे सर्वोच्च न्यायालय का फैसला ऐतिहासिक

मुख्य मंत्री द्वारा केन्द्र से राज्य को विशेष आर्थिक पैकेज देने की मांग

मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने केन्द्र की यूपीए सरकार द्वारा उन राज्यों के विरुद्ध पक्षपात पूर्ण रवैये पर चिंता व्यक्त की है, जहां गैर यूपीए दलों की सरकारें सत्ता में हैं। उन्होंने कहा कि यह शासन की लोकतांत्रिक प्रणाली की संघीय संरचना के विरुद्ध है। मुख्यमंत्री गत दिनों शिमला में पत्रकारों के साथ अनौपचारिक बातचीत कर रहे थे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य हित के विभिन्न मामले केन्द्र स्तर पर अलग-अलग मंत्रालयों में लम्बित पड़े हैं तथा बार-बार केन्द्र सरकार के साथ इन्हें उठाने के बावजूद भी कोई सकारात्मक हल नहीं निकला है। उन्होंने कहा कि प्रदेश भाखड़ा ब्यास प्रबन्धन बोर्ड (बीबीएमबी) की 1966 से 1996 के मध्य की देनदारियों के मामले में माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा राज्य के पक्ष में दिए गए ऐतिहासिक निर्णय के लिए न्यायालय का ऋणी है। इस निर्णय से प्रदेश को कुछ राहत मिलेगी, क्योंकि जल विद्युत परियोजनाओं के निर्माण में प्रदेश के लोगों ने बड़ी कुर्बानियां दी हैं और बदले में उन्हें कुछ नहीं मिला है। उन्होंने कहा कि प्रदेश ने केन्द्र सरकार से आग्रह किया था कि छठे वेतन आयोग को कार्यान्वित करने के एवज़ में राज्य को प्रतिपूर्ति के लिए विशेष पैकेज प्रदान किया जाए। देश के कई अन्य राज्यों की भी यही मांग है। उन्होंने कहा कि केन्द्र सरकार ने इस सम्बन्ध में उच्च अधिकारियों की एक समिति गठित की थी, जिसे 31 दिसम्बर, 2010 तक अपनी संस्तुतियां देनी थीं, किन्तु अभी तक इस सम्बन्ध में केन्द्र ने कोई जानकारी नहीं दी है।

प्रो. धूमल ने कहा कि राज्य ने केन्द्र सरकार से यह मांग भी की थी कि प्रदेश को केन्द्र सरकार द्वारा तय किए गए मानकों के अनुरूप सकल राज्य घरेलू उत्पाद के आधार पर ऋण लेने की अनुमति प्रदान की जाए। किन्तु केन्द्र ने राज्य की ऋण सीमा को 2200 करोड़ रुपये से घटाकर 1600 करोड़ रुपये कर दिया। उन्होंने कहा कि वार्षिक योजना का आकार केन्द्र सरकार के विचार-विमर्श से तय किया जाता है, क्योंकि इसके लिए संसाधन जुटाने पड़ते हैं और ऐसे में केन्द्र सरकार की सहायता आवश्यक होती है, किन्तु इस दिशा में भी कुछ नहीं किया गया। उन्होंने कहा कि इसके अतिरिक्त केन्द्र ने 13वें वित्त आयोग में प्रदेश को मामूली बढ़ौतरी दी है। इसके तहत अन्य राज्यों को 125 प्रतिशत तक की बढ़ौतरी दी गई और हिमाचल प्रदेश को केवल 50 प्रतिशत की बढ़ौतरी दी गई। इसकी प्रतिपूर्ति के लिए हिमाचल प्रदेश को विशेष वित्त पैकेज मिलना चाहिए। उन्होंने कहा कि इसी प्रकार केन्द्र ने मार्च 2013 तक घोषित पैकेज को न बढ़ा कर हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और अन्य गैर यूपीए शासित प्रदेशों के साथ अन्याय किया है। उन्होंने कहा कि केन्द्र के समक्ष लम्बित मामलों की एक लम्बी फेहरिस्त है, जिनमें सशस्त्र एवं अर्ध सैन्य बलों में हिमाचली युवाओं के लिए भर्ती कोटा बढ़ाना, पूर्व सैनिकों के लिए वन रैंक वन पेंशन, डोगरा रेजिमेंटल केन्द्र को ऊना में रिलोकेट करना, राज्य में रेल नेटवर्क बढ़ाना, राष्ट्रीय उच्च मार्गों के रख-रखाव और मरम्मत के लिए समुचित धन उपलब्ध करवाना तथा पूर्व केन्द्रीय सड़क एवं भूतल परिवहन मंत्री श्री कमल नाथ द्वारा स्वीकृत किए गए पांच राष्ट्रीय उच्च मार्गों की अधिसूचना जारी करना शामिल है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि इन सभी मामलों को वे व्यक्तिगत रूप से भारत के प्रधानमंत्री, केन्द्रीय गृह एवं वित्त मंत्रियों एवं विभिन्न मंत्रियों से बार-बार उठाते रहे हैं, किन्तु अभी तक इनका कोई सकारात्मक (शेष पृष्ठ 11 पर)

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल शिमला में जन समस्याओं का निपटारा करते हुए

चिनाब नदी पर कुल प्रभाव आकलन शर्त समाप्त करने का आग्रह

जलविद्युत क्षमता का दोहन राष्ट्रीय हित में–प्रो. धूमल

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने भारत सरकार से आग्रह किया है कि केन्द्रीय पर्यावरण एवं वन मंत्रालय द्वारा लगाई गई कुल प्रभाव आकलन शर्त अध्ययन को समाप्त किया जाए ताकि राज्य में चिनाब नदी पर जल विद्युत परियोजनाएं निष्पादित की जा सकें। केन्द्रीय पर्यावरण एवं वन राज्य मंत्री सुश्री जयन्ती नटराजन को लिखे एक पत्र में मुख्यमंत्री ने कहा कि केन्द्र सरकार का यह निर्णय एकतरफा है और राज्य के हितों के विरुद्ध है। मुख्यमंत्री ने पत्र में लिखा है कि प्रदेश की विभिन्न क्षमताओं की 28 जल विद्युत परियोजनाएं, जो 5800 मेगावाट ऊर्जा उत्पादन की क्षमता रखती हैं, को स्वीकृति मिलने की प्रक्रिया अग्रिम चरण में है। इनमें से 3670 मेगावाट की 16 जल विद्युत परियोजनाओं को वर्ष 2013-14 में स्वीकृति मिलने की संभावना है, जबकि 3179 मेगावाट क्षमता की 12 परियोजनाओं को वर्ष 2015-16 में स्वीकृति मिलेगी। उन्होंने कहा कि राज्य में कुल जल विद्युत क्षमता का 90 प्रतिशत निष्पादन के लिए आबंटित किया जा चुका है, जिसमें 28 परियोजनाएं चिनाब नदी पर निष्पादित की जानी हैं। राज्य ने प्राथमिकता के आधार पर सम्पूर्ण उपलब्ध जल विद्युत क्षमता के दोहन के लिए लक्ष्य कार्यक्रम तैयार किया है तथा इस प्रकार की शर्त से परियोजनाओं के निष्पादन में देरी होगी, जिससे प्रदेश की पूर्ण जल विद्युत क्षमता के दोहन पर विपरीत असर पड़ेगा। उन्होंने कहा कि राज्य में 23000 मेगावाट से अधिक जल विद्युत क्षमता चिन्हित की गई है, जिसमें से अभी तक केवल 25 प्रतिशत (शेष पृष्ठ 11 पर)

28 जलविद्युत परियोजनाओं में 5800 मेगावाट क्षमता

नाबार्ड कृषि क्षेत्र के ऋण प्रवाह में करेगा बढ़ोतरी

प्रधान सचिव योजना एवं वित्त डा. श्रीकांत बाल्दी ने राज्य में वित्तीय एवं ऋण समावेश का शत प्रतिशत लक्ष्य हासिल करने के लिए राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) की सराहना की है। उन्होंने बैंक द्वारा राज्य के विकास के लिए ऋण एवं गैर ऋण की भूमिका तथा राज्य के लिए शुरू किए गए विकास कार्यों के लिए भी बैंक की सराहना की है। डा. बाल्दी गत दिनों शिमला में नाबार्ड द्वारा वित्तीय वर्ष 2012-13 के लिए आयोजित राज्य ऋण सम्मेलन की अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होंने इस अवसर पर नाबार्ड द्वारा वर्ष 2012-13 के लिए तैयार स्टेट फोक्स पेपर का विमोचन भी किया।

डा. बाल्दी ने बैंकों से आग्रह किया कि कृषि क्षेत्र में ऋण प्रवाह को बढ़ाया जाना चाहिए क्योंकि प्रदेश के कुल राज्य घरेलू उत्पाद में कृषि एवं सम्बद्ध क्षेत्रों के प्रतिशत अंशदान में गिरावट दर्ज की गई है। उन्होंने ऋण निवेश पर ध्यान केन्द्रित कर रोजगार सृजन की संभावनाओं के लिए नाबार्ड तथा अन्य बैंकों के सक्रिय सहयोग का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि कृषि तथा सम्बद्ध क्षेत्रों ने अपेक्षानुसार विकास नहीं किया तथा प्रत्येक विभाग को किसानों की आय एवं विकास के लिए उपाय सुनिश्चित बनाने होंगे। उन्होंने कहा कि प्राथमिक क्षेत्रों में सतत विकास प्राप्त करने के उपाय सुनिश्चित बनाने आवश्यक हैं। उन्होंने कहा कि किसानों को यह समझाना होगा कि फसल उत्पादन बढ़ाने के लिए निवेश आवश्यक है।

राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) के हिमाचल प्रदेश क्षेत्रीय कार्यालय के मुख्य महाप्रबन्धक श्री नरेश गुप्ता ने सामाजिक आर्थिक विकास के प्रयासों के लिए अपनाई जा रही सकारात्मक सोच के लिए राज्य सरकार को बधाई दी। उन्होंने सरकारी मशीनरी एवं बैंकों के मध्य बेहतर समन्वय स्थापित करने के लिए भी राज्य सरकार की सराहना की। उन्होंने कहा कि स्टेट फोक्स पेपर में ग्रामीण परिदृश्य तथा (शेष पृष्ठ 11 पर)

शिशु मृत्यु दर घटी

स्वास्थ्य मंत्री डा. राजीव बिंदल ने केन्द्र सरकार से आग्रह किया है कि हिमाचल प्रदेश को विशेष पैकेज प्रदान किया जाए ताकि राज्य में स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ किया जा सके। डा. बिंदल ने गत दिनों नई दिल्ली में केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री श्री गुलाम नबी आज़ाद से भेंट कर कहा कि हिमाचल प्रदेश सीमित संसाधनों वाला एक छोटा राज्य है। किन्तु इसके बावजूद भी राज्य में शिशु मृत्यु दर घटी है और राज्य में संस्थागत प्रसव के मामलों में बढ़ौतरी दर्ज की गई है। सैंपल पंजीकरण प्रणाली 2010 डाटा में भी यह सिद्ध हुआ है। उन्होंने कहा कि इस डाटा के अनुसार शिशु मृत्यु दर वर्ष 2009 की 45-46 से घटकर 40 हो गई है। यह सब राज्य सरकार द्वारा कार्यान्वित की जा रही मातृ सेवा योजना, जननी सुरक्षा योजना, अटल स्वास्थ्य सेवा जैसी स्वास्थ्य सम्बन्धी योजनाओं के कारण संभव हुआ है। उन्होंने कहा कि प्रदेश के (शेष पृष्ठ 11 पर)

संस्थागत प्रसव मामलों में बढ़ोतरी

जैविक खेती के तहत 25 हजार किसान पंजीकृत

कृषि उत्पादन कार्यक्रम के अन्तर्गत कृषि विभाग ने चालू रबी मौसम में 7.41 लाख टन खाद्यान्न उत्पादन का लक्ष्य निर्धारित किया है। इसके अतिरिक्त तिलहन 3.36 हजार टन, आलू 27.00 हजार टन व सब्जी के 5.20 लाख टन के उत्पादन लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं। उन्होंने कहा कि उपभोक्ताओं में जैविक उत्पादों के प्रति रुझान बढ़ रहा हैं तथा जैविक उत्पाद के अधिक मूल्य प्राप्त हो रहे हैं। जैविक खेती के अन्तर्गत अब तक 25000 किसानों को पंजीकृत किया जा चुका है तथा 4,00,000 वर्मीकम्पोस्ट यूनिट बनाये जा चुके हैं। निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने के लिये कृषि सामग्री के समुचित व व्यापक प्रबन्ध किये गये हैं, जिसके अन्तर्गत 7200 मीट्रिक टन उन्नत बीज, 29500 मीट्रिक टन रासायनिक खादें, 10 मीट्रिक टन जैविक खादें 45 मीट्रिक टन दवाइयां व 50,000 सुधरे कृषि औजार किसानों को उपलब्ध करवाये जा रहे हैं।

राज्य के किसानों को उच्च गुणवत्ता की कृषि सामग्री उपलब्ध करवाने के उद्देश्य से रबी मौसम में 1000 खाद नमूने, 600 पौध संरक्षण दवाइयों के नमूने, 150 बीज के नमूने लिये जाएंगे व उनकी जांच की जायेगी। इसके अतिरिक्त मिट्टी के 62,500 नमूने जांचे जायेंगे ताकि किसान परीक्षण के आधार पर खादों का प्रयोग करें। किसानों को 62,500 'मिट्टी स्वास्थ्य कार्ड' उपलब्ध करवाये जायेंगे। वर्तमान रबी मौसम में गेहूं व जौ की फसलों पर कृषि बीमा योजना लागू रहेगी तथा सोलन में टमाटर व कांगड़ा और ऊना जिले में आलू की फसल को प्रायोगिक तौर पर मौसम आधारित फसल बीमा योजना में शामिल किया गया है। उन्होंने किसानों का आह्वान किया कि वे कृषि सम्बन्धी जानकारी व सरकार द्वारा चलाई जा रही कृषि योजनाओं का अधिक से अधिक लाभ उठाएं। यह जानकारी कृषि विभाग के एक प्रवक्ता ने गत दिनों शिमला में दी।

- **चार लाख केंचुआ खाद इकाइयां निर्मित**
- **रबी मौसम में 7.41 लाख टन खाद्यान्न उत्पादन का लक्ष्य**

चायल में बिजली आपूर्ति सुदृढ़ करने के लिए स्थापित किये गये 16 नये ट्रांसफार्मर

स्वास्थ्य एवं आयुर्वेद मंत्री डॉ. राजीव बिंदल ने गत दिनों चायल पंचायत घर में प्रशासन जनता के द्वार कार्यक्रम के तहत जन समस्याएं सुनी और उनका मौके पर निपटारा किया। इस शिकायत निवारण शिविर में चायल क्षेत्र की सात पंचायतों सकोड़ी, नगाली, झाजा, धंगील, चायल, बांजणी, हिन्नर, आदि के लगभग 200 ग्रामीण लोगों ने भाग लिया और अपनी समस्याओं से स्वास्थ्य मंत्री को अवगत करवाया।

स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि चायल क्षेत्र में पर्यटन की अपार संभावनाएं है और प्रदेश सरकार द्वारा अपने चार वर्षों के कार्यकाल के दौरान चायल क्षेत्र में पर्यटन के विकास के लिए करोड़ों रुपये की धनराशि व्यय की गई है।

उन्होंने कहा कि चायल क्षेत्र की खूबसूरती और यहां पर पर्यटकों के बढ़ते रूझान को देखते हुए चायल में 'विंटर कार्निवाल' जैसे पर्यटकों से जुड़े कार्यक्रमों का आयोजन किया जा सकता है। उन्होंने स्थानीय लोगों से इस संदर्भ में अपने प्रयासों को आगे बढ़ाने के लिए कहा ताकि चायल क्षेत्र में रोजगार अवसरों को और अधिक सुदृढ़ किया जा सके।

उन्होंने कहा कि चायल क्षेत्र में बिजली आपूर्ति को सुदृढ़ करने के लिए 95 लाख रुपये की लागत से 16 नये ट्रांसफारमर स्थापित किये गए हैं। इसी प्रकार चायल क्षेत्र के बिजली के 70 पुराने खंबों को बदलने के लिए 18 लाख रुपये की धन राशि भी स्वीकृत की गई है। उन्होंने कहा कि गौड़ा में 11 करोड़ की लागत से सब स्टेशन का निर्माण कार्य प्रगति पर है जिसके पूरा होने पर इस क्षेत्र के लोगों को अत्यंत लाभ होगा।

स्वास्थ्य मंत्री ने चायल मेला ग्राउंड के विकास तथा मंच के जीर्णोद्धार के लिए 10 लाख रुपये देने की घोषणा की। उन्होंने डुनी सामुदायिक केन्द्र भवन के निर्माण के लिए दो लाख रुपये, चावड़ी सड़क के निर्माण के लिए एक लाख रुपये, शमशानघाट के लिए 50 हजार रुपये देने की घोषणा भी की।

प्रशासन जनता के द्वार कार्यक्रम के तहत आज 50 शिकायतों का मौके पर निपटारा किया गया। इसी प्रकार 30 विभिन्न प्रकार के प्रमाण पत्र भी जारी किये गए तथा सात गन लाईसेंसों का नवीनीकरण किया गया।

कल्याण योजनाओं से मिली सामाजिक सुरक्षा

● राजेश कुमार जसवाल

प्रदेश सरकार द्वारा समाज के कमजोर वर्गों के लिए आरम्भ की गई योजनाओं के लाभ पात्र व्यक्तियों को सुनिश्चित होने से उनके जीवन में आशा की नई किरण जगी है। इसी के तहत जिला सिरमौर के पांवटा विकास खण्ड में समाज के इन विभिन्न वर्गों के कल्याण हेतु कार्यान्वित की जा रही विभिन्न योजनाओं पर वर्ष 2010–11 के दौरान लगभग 2.90 करोड़ रुपये व्यय किए गए हैं।

समाज के विभिन्न वर्गों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने के लिए पांवटा विकास खण्ड में लगभग 5200 पात्र लोगों पर लगभग 2.20 करोड़ रुपये बतौर सामाजिक सुरक्षा पेंशन खर्च किए जा रहे हैं। सामाजिक सुरक्षा पेंशन के अन्तर्गत यह पेंशन उन बेसहारा वृद्धों को 330 रुपये प्रतिमाह की दर से उपलब्ध करवाई जा रही है, जिनकी आयु 60 वर्ष या इससे अधिक है तथा उनके पालन पोषण व देखरेख का उचित साधन नहीं है, स्वयं की वार्षिक आय 9,000 रुपये तथा परिवार की 15,000 रुपये से अधिक न हो या फिर बी.पी.एल. परिवार से संबंधित हो। जबकि विधवा/परित्यक्ता/एकल नारी पेंशन योजना के अधीन वह विधवा/परित्यक्ता/एकल महिलाएं जिनकी उम्र 40 वर्ष से अधिक है, वार्षिक आय 9,000 रुपये व परिवार की 15,000 रुपये से अधिक न हो या फिर बी.पी.एल. परिवार से संबंधित हो। इसी तरह अपंगता पेंशन के तहत 40 प्रतिशत या इससे अधिक विकलांगता वाले व्यक्ति जिनकी वार्षिक आय 9,000 रुपये व परिवार की 15,000 रुपये से अधिक न हो। यही नहीं कुष्ठ रोग से पीड़ित व्यक्तियों को भी यह सुविधा दी जा रही है।

समाज के विभिन्न वर्गों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने के लिए पांवटा विकास खण्ड में लगभग 5200 पात्र लोगों पर लगभग 2.20 करोड़ रुपये बतौर सामाजिक सुरक्षा पेंशन खर्च किए जा रहे हैं।

इसी तरह गृह अनुदान योजना के तहत अनुसूचित जाति/जनजाति तथा पिछड़ा वर्गों के सदस्य, जिनकी वार्षिक आय समस्त साधनों से 17,000 रुपये से अधिक न हो, को मकान बनाने के लिए 48,500 रुपये तथा मुरम्मत कार्य के लिए 15,000 रुपये की अनुदान राशि प्रदान की जा रही है। वर्ष 2010–11 के दौरान पांवटा विकास खण्ड में गृह निर्माण हेतु 122 व गृह मुरम्मत हेतु 07 परिवारों पर 56,62,000 रुपये व्यय किए गए हैं। अर्न्तजातीय विवाह योजना के तहत 25,000 रुपये की प्रोत्साहन राशि प्रदान की जा रही है और 11 ऐसे मामलों में 2,75,800 रुपये की राशि पिछले वर्ष उपलब्ध करवाई गई है। विकलांग विवाह योजना के तहत 75 प्रतिशत विकलांगता वाले 05 पात्र लोगों पर 51,000 रुपये की राशि व्यय की गई है, जबकि मुख्य मंत्री कन्यादान योजना के तहत गरीब परिवारों की बेटियों के विवाह पर 11,001 रुपये की धनराशि दी जाति है, इसके तहत 26 पात्र परिवारों पर 2,86,026 रुपये की तथा अनुसूचित जाति बस्ती सुधार योजना के अर्न्तगत 05 पात्र परिवारों पर 4,77,900 रुपये की धनराशि उपलब्ध करवाई गई है।

यही नहीं अपंग छात्रवृति योजना के तहत 41 पात्र बच्चों पर 1,02,991 रुपये की राशि व्यय की की है, यह राशि पहली से पांचवीं कक्षा तक 150 रुपये, छठी से आठवीं तक 200 रुपये, नवीं व दसवीं कक्षा में 250 रुपये, 11वीं व 12वीं कक्षा में 300 रुपये, स्नातक व स्नातकोत्तर स्तर पर क्रमशः 350 व 450 रुपये प्रतिमाह की दर से वितरित की जा रही है। इसी तरह अनुवर्ती कार्यक्रम के अर्न्तगत अपना स्वरोजगार शुरू करने के लिए अनुसूचित जाति के 75, अनुसूचित जनजाति के 04 व अन्य पिछडा वर्ग के 33 पात्र लोगों पर सरकार ने 1,45,600 रुपये राशि व्यय की है। इस कार्यक्रम के तहत ऐसे व्यक्ति जिनकी वार्षिक आय 11000 रुपये से अधिक न हो, तो अपना कार्य जैसे बढ़ई, कताई व बुनाई, सिलाई इत्यादि काम शुरु करने के लिए 1300 रुपये तक का अनुदान दिया जाता है।

माता शबरी योजना

गरीब महिलाओं के लिए वरदान

● दया राम शर्मा

पिछड़े एवं गरीब परिवारों की महिलाओं, को ईंधन लकड़ी इकट्ठा करने के कार्य से छुटकारा दिलाने हेतु प्रदेश सरकार द्वारा शुरू माता शबरी योजना वरदान साबित हुई है।

गरीबी रेखा से नीचे गुजर बसर करने वाले अनुसूचित जाति के परिवारों की महिलाओं को ईंधन लकड़ी एकत्रित करने के कठीन कार्य से छुटकारा दिलाने के लिए योजना को शुरू किया गया है। इस योजना के अर्न्तगत अनुसूचित जाति के गरीब परिवार की महिलाओं को जिनके पास एलपीजी गैस कुनैक्शन नहीं है, गैस कुनैक्शन एवं स्टोव खरीदने के लिए 50 प्रतिशत की राशि उपदान के रूप में सरकार द्वारा अदा की जा रही है।

जिला शिमला में 'माता शबरी महिला सशक्तिकरण' योजना के तहत जिला में अनुसूचित जाति वर्ग के गरीब परिवारों की महिलाओं को 600 एलपीजी गैस कुनैक्शन वितरति करने का लक्ष्य रखा गया है। इन परिवारों की महिलाओं को गैस कनैक्शन मिलने से ईंधन लकड़ी इक्कठा करने के लिए पूरा दिन बिताने के एवज में रोजगार का कोई अन्य कार्य कर सकेंगी। इससे एक तो ईंधन लकड़ी के प्रयोग से घर में पैदा होने वाले धुआं प्रदूषण से निजात मिलेगी और साथ ही स्वच्छ वातावरण भी उपलब्ध होगा।

पात्र लाभार्थियों का चयन सम्बन्धित ग्राम सभा द्वारा प्रत्येक वर्ष किया जाएगा तथा चयनित सूची बाल विकास परियोजना अधिकारी को प्रेषित की जायेगी। बाल विकास परियोजना अधिकारी जांच पड़ताल करने के उपरान्त प्राप्त मामले अनुमोदन हेतू जिला कार्यक्रम अधिकारी, महिला एवं बाल विकास को प्रेषित करेंगे।

शिमला जिला में 'माता शबरी महिला सशक्तिकरण योजना' के अर्न्तगत मशोबरा विकास खण्ड में 75, बसन्तपुर में 37, नारकण्डा में 38, रोहड़ू में 38, छोहरा में 37, चौपाल में 75, ठियोग में 75, तथा जुब्बल कोटखाई विकास खण्ड में 75 एलपीजी गैस कुनैक्शन दिये जायेंगे। इस सुविधा के लिए गैस कुनैक्शन की कुल कीमत का 50 प्रतिशत प्रति परिवार उपदान दिया जा रहा है। इससे जहां पर्यावरण में सुधार होगा वहीं गरीब अनुसूचित जाति के परिवार को एलपीजी गैस कुनैक्शन का सुख भोगने का अवसर मिलेगा।

पात्र लाभार्थियों का चयन सम्बन्धित ग्राम सभा द्वारा प्रत्येक वर्ष किया जाएगा तथा चयनित सूची बाल विकास परियोजना अधिकारी को प्रेषित की जायेगी। बाल विकास परियोजना अधिकारी जांच पड़ताल करने के उपरान्त प्राप्त मामले अनुमोदन हेतू जिला कार्यक्रम अधिकारी, महिला एवं बाल विकास को प्रेषित करेंगे तथा जिले की समस्त पंचायतो द्वारा अनुमोदन मामलों की स्वीकृति उपायुक्त द्वारा प्रदान की जाएगी।

किसानों की तकदीर बदलती कृषि योजनाएं

● जयंत शर्मा

पढ़े-लिखे विनोद कुमार ने नौकरी के पीछे न दौड़कर स्वरोजगार की दिशा में अपने कदम बढ़ाए। कृषि को अपने रोजगार का साधन बनाया और पॉलीहाउस जैसी आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल कर आज वह प्रदेश के अन्य शिक्षित बेरोजगारों के लिए मिसाल बना है। वह इतना कमा लेता है कि अपने परिवार के भरण-पोषण के अतिरिक्त अच्छी खासी कमाई कर जीवन स्तर को ऊंचा कर रहा है। नौकरी की बात उसके लिए बेमानी है। उसका कहना है कि 'आज समय बदल चुका है, हर किसी को रोजगार मिलना काफी कठिन है, इसलिए स्वरोजगार की दिशा में आगे बढ़ने की जरूरत है। प्रदेश सरकार की अनेक योजनाओं का लाभ उठाकर जीवन की दिशा बदली जा सकती है।' प्रदेश में अकेला विनोद कुमार ही नहीं बल्कि ऐसे अनेक शिक्षित युवा हैं, जो स्वरोजगार की दिशा में आगे बढ़े हैं।

हिमाचल प्रदेश की अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्वपूर्ण योगदान है तथा प्रदेश की अधिकांश जनसख्या परोक्ष व अपरोक्ष रूप से कृषि से जुड़ा है। राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि व इससे जुड़े क्षेत्रों का लगभग 20 प्रतिशत योगदान है। राज्य की आर्थिकी में कृषि के महत्वपूर्ण योगदान के दृष्टिगत प्रदेश सरकार द्वारा कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों पर कुल योजना बजट का 12 प्रतिशत व्यय किया जा रहा है, जोकि देश भर में सर्वाधिक है।

प्रदेश सरकार कृषि क्षेत्र के विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान कर रही है, ताकि उत्पादन एवं उत्पादकता को बढ़ावा दने के साथ-साथ ग्रामीण आर्थिकी में सुधार लाया जा सके। प्रदेश में 'पंडित दीनदयाल किसान-बागवान समृद्धि योजना' को सफलतापूर्वक कार्यान्वित किया जा रहा है। अब तक इस परियोजना के अन्तर्गत 8740 पॉलीहाउस का निर्माण किया गया है, जिसपर किसानों को 65 करोड़ रुपये उपदान के रूप में दिए गए। इस महत्वपूर्ण योजना के अन्तर्गत गत चार वर्षों में 10 लाख वर्ग मीटर क्षेत्र को संरक्षित खेती के अधीन लाया गया है। योजना के दूसरे चरण में 20,000 हैक्टेयर क्षेत्र को सूक्षम सिंचाई के अन्तर्गत लाया जाएगा। अब तक इस परियोजना के अन्तर्गत 9000 हैक्टेयर क्षेत्र सूक्ष्म सिंचाई के अन्तर्गत लाया जा चुका है, जिसपर किसानों को 45 करोड़ रुपये उपदान के रूप में दिए गए। पॉलीहाउस व स्प्रिंकलर/ड्रिप पर 80 प्रतिशत उपदान दिया जा रहा है तथा पानी के स्रोत पर 50 प्रतिशत उपदान है। बांस के पॉलीहाउस पर उपदान 90 प्रतिशत कर दिया गया है तथा पॉलीहाउस बीमा सुविधा भी उपलब्ध करवाई गई है। किसानों को आवश्यक तकनीकी सहयोग, उपकरण एवं विपणन अधोसंचना उपलब्ध करवायी जा रही है, ताकि वे इस योजा का पूरा लाभ उठा सकें। इससे ग्रामीण युवाओं को कृषि रोजगार के अवसर उपलब्ध करवाने में भी सहायता मिली है। पॉलीहाउस में सूक्ष्म सिंचाई से 40 प्रतिशत तक पानी की बचत हो रही है। योजना के अन्तर्गत 45 हजार लोगों को स्वरोजगार प्राप्त होगा।

कृषि व संबद्ध क्षेत्रों का विकास करके 11वीं पंचवर्षीय योजना के दौरान कृषि क्षेत्र में 4 प्रतिशत की विकास दर प्राप्त करने के लिए 'राष्ट्रीय कृषि विकास योजना' आरम्भ की गई है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत प्रदेश में पहली बार 'जिला कृषि योजनाएं' तैयार की गई है तथा राज्य कृषि योजना भी बनाई गई हैं ताकि योजनाबद्ध तरीके से कृषि का समग्र विकास किया जा सके। इस योजना के अन्तर्गत गत चार वर्षों में 160 करोड़ रुपये व्यय किए गए हैं।

कृषि फसल में विविधिता तथा जैविक खेती को प्रोत्साहन देने के लिए जापान इंटरनेशनल कारपोरेशन एजेंसी (जायका) के माध्यम से वित्तपोषित 'कृषि विविधता प्रोत्साहन' परियोजना को भी आरम्भ किया गया है तथा इसे 14 अगस्त, 2011 से आरम्भ किया गया है। इस परियोजना की कुल लागत 321 करोड़ रुपये है तथा इसे सात वर्षों में चरणबद्ध रूप से क्रियान्वित किया जाएगा। इस परियोजना के माध्यम से जल संग्रहण, सिंचाई, जैविक कृषि, फसलोपरांत प्रबंधन, खेत-खलिहानों तक सड़कों की पहुंच तथा संस्थागत प्रणाली को सुदृढ़ किया जाएगा। कृषि योजनाओं का लाभ किसानों तक पहुंचाने के लिए प्रदेश की सभी पंचायतों में 'कृषक मित्र' का चुनाव किया जा रहा है, जो किसानों व कृषि विभाग के साथ तालमेल कर कृषि संबंधी योजनाओं को किसानों तक पहुंचाएंगे। अब तक 3100 पंचायतों में कृषक मित्र चयनित किए जा चुके हैं।

रासायनिक खादों व दवाइयों की कम खपत के कारण प्रदेश में जैविक खेती के लिए आदर्श परिस्थितियां है। किसानों को वर्मीकम्पोस्ट बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। प्रदेश में चार लाख वर्मीकम्पोस्ट यूनिट बनाये गए तथा 25,000 कृषकों को जैविक खेती के लिए पंजीकृत किया जा चुका है। पहाड़ी खेती के मशीनीकरण एवं यान्त्रिकरण के लिए प्रदेश सरकार किसानों में नए उपकरण तथा मशीनों को प्रचलित कर रही है। किसानों को बड़े स्तर पर पावर टिलर उपलब्ध करवाए गए हैं। 8 हार्स पावर से कम के पावर टिलर पर 25000 रुपये का उपदान दिया जा रहा है। 8 या 8 हार्स पावर से अधिक के पावर टिलर व 40 हार्स पावर तक के ट्रैक्टर पर उपदान 30000 रुपये से बढ़ाकर 45000 रुपये कर दिया गया है।

प्रदेश में कृषि उत्पादन बढ़ाने व भूमि की उपयोगिता जानने के लिए 'मिट्टी परीक्षण' का बहुत महत्व है। प्रदेश सरकार द्वारा किसानों को नि:शुल्क मिट्टी परीक्षण की सुविधा उपलब्ध करवाई जा रही है। गत चार वर्षों में प्रदेश में 4,50,231 लाख 'मिट्टी स्वास्थ्य कार्ड' वितरित किए गए। टमाटर, आलू, एवं अदरक को 'मौसम आधारित फसल बीमा योजना' के अंतर्गत लाया गया है। सरकार द्वारा वर्ष 1950 और 1960 के बीच तकावी व भू संरक्षण ऋण न लौटाने वाले प्रदेश के 43,485 छोटे किसानों के 4.95 करोड़ रुपये के कर्जे माफ कर उन्हें राहत प्रदान की। इसके अतिरिक्त, 10 लाख तक के कृषि ऋणों पर स्टांप व पंजीकरण शुल्क माफ किया गया।

किसानों एवं फल उत्पादकों को लाभान्वित करने के लिए शिमला जिले के पराला में 100 करोड़ रुपये की लागत से अत्याधुनिक मार्किट यार्ड का निर्माण कार्य आरम्भ किया गया है। ऐसा ही मार्किट यार्ड प्रदेश के निचले क्षेत्र में स्थापित करने की सैद्धांतिक स्वीकृति प्रदान की गई है। गत चार वर्षों में 25 करोड़ रुपये व्यय कर 14 मार्किट यार्ड का निर्माण किया गया। जबकि तीन मार्किट यार्ड का निर्माण कार्य प्रगति पर है तथा 14 और मार्किट यार्ड/सेब यार्ड स्थापित करने की योजना है।

प्रदेश सरकार अपनी नीतियों एवं कार्यक्रमों के माध्यम से कृषि आय में वृद्धि तथा ग्रामीण आर्थिकी में समृद्धि लाने के प्रति वचनबद्ध है। राज्य का छोटे से छोटा किसान अपने उत्पाद को अच्छे दामों पर बेच कर आय अर्जित कर सके, इसके लिए प्रदेश सरकार ने 'अपनी मण्डी योजना' भी आरम्भ की है ताकि किसान व्यापक तौर पर लाभान्वित हो सके। इस समय प्रदेश में 29 स्थानों पर यह मण्डियां कार्य कर रही हैं। प्रदेश सरकार द्वारा कृषि क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्यों के लिए 'स्टेट एग्रीकल्चर लीडरशिप अवार्ड-2010' से सम्मानित किया गया।

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल से शिमला में किन्नौर जिले के अक्पा गांव का एक प्रतिनिधि मण्डल भेंट के दौरान

विकास कार्यों की समीक्षा

लोक सभा सांसद विरेन्द्र कश्यप ने गत दिनों रोहड़ू में उपमण्डल स्तरीय अधिकारियों के साथ बैठक कर क्षेत्र में सांसद निधि के अन्तर्गत चल रहे विकास कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने अधिकारियों से निर्माण कार्यों में तेजी लाने को कहा, साथ ही उन्होंने पूरे किये जा चुके कार्यों के उपयोगिता प्रमाण पत्र उपलब्ध करवाने के निर्देश भी दिए। उन्होंने खण्ड विकास अधिकारियों से सभी कार्यों का विस्तृत ब्योरा लिया। इस मौके पर एसडीएम एम आर धीमान भी उपस्थित थे।

इससे पूर्व विरेन्द्र कश्यप ने लोअर कोटी में शांद यज्ञ में भी भाग लिया। शिमला के विधायक श्री सुरेश भारद्वाज भी इस मौके पर उपस्थित थे। उन्होंने चवाड़ी देवता मंदिर के सौंदर्यकरण के लिये तीन लाख रुपये की राशि भी स्वीकृत की।

आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति सुनिश्चित बनाने के निर्देश

मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने सभी उपायुक्तों को निर्देश दिए हैं कि बर्फबारी वाले क्षेत्रों में लोगों को आवश्यक वस्तुएं सुनिश्चित बनाने के अतिरिक्त बुनियादी सुविधाओं की जल्द आपूर्ति की जाए। उन्होंने कहा कि इन क्षेत्रों में लोगों को सभी मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध करवाने के भरसक प्रयास किए जा रहे हैं।

उन्होंने सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देश दिए कि लोगों को पेयजल, बिजली, अनाज और अन्य बुनियादी सुविधाओं की आपूर्ति नियमित रूप से सुनिश्चित बनाई जाए। वाहनों की सुचारू आवाजाही के लिए उन्होंने सड़कों से बर्फ हटाने तथा बर्फ प्रभावित क्षेत्रों में सम्पर्क सड़क मार्गों को प्राथमिकता के आधार पर वाहनों के लिए खोलने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सर्दी के मौसम के लिए प्रदेश के जनजातीय व दुर्गम क्षेत्रों में आवश्यक वस्तुओं की पर्याप्त आपूर्ति पहले ही कर दी गई है।

प्रो. धूमल ने राज्य एवं जिला प्रशासन को निर्देश दिए हैं कि जमाखोरी पर नज़र रखी जाए और आम जनता को आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं की आपूर्ति नियमित रूप से सुनिश्चित बनाई जाए। उन्होंने प्रदेश की जनता को आश्वस्त किया कि सड़कों और संचार सुविधा को सुचारु बनाए रखने के पूरे प्रयास किए जाएंगे ताकि भारी हिमपात व वर्षा के कारण उन्हें कोई असुविधा न हो।

सिरमौर जिले में पेयजल व सिंचाई योजनाओं पर 210 करोड़ व्यय

सिंचाई एवं जन स्वास्थ्य विभाग के माध्यम से प्रदेश सरकार पीने के पानी, सिंचाई, हैंडपम्प इत्यादि पर 1600 करोड़ रुपये खर्च कर रही है जिसमें से ज़िला सिरमौर में 112 करोड़ रुपये खर्च किये जा रहे हैं यह जानकारी देते हुए सिंचाई एवं जन स्वास्थ्य मंत्री ठाकुर रविन्द्र सिंह रवि ने सिरमौर जिले के कौलावालाभूड़ में 6.67 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाले मईधार, सूरला, बैरीवाला, निचलाभूड़ तथा शेष रह गईं 82 बस्तियों के लगभग आठ हजार लोगों को लाभान्वित करने वाली पेयजल योजना का शिलान्यास करने के बाद उपस्थित लोगों को दी।

उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार ने अपने चार वर्ष के कार्यकाल में ज़िला सिरमौर में सिंचाई एवं जन स्वास्थ्य विभाग के माध्यम से 210 करोड़ रुपय व्यय किये हैं। उन्होंने जानकारी दी कि ज़िला में 1594 पेयजल योजनाएं पिछले चार वर्षों में स्वीकृत हुई है। चार वर्ष के कार्यकाल में 958 हेक्टेयर भूमि को सिंचाई के तहत् लाया गया है तथा 1200 हेक्टेयर भूमि को बाढ़ नियंत्रण कार्यक्रम के तहत बचाया गया है। उन्होंने कहा कि नल के माध्यम से पानी उपलब्ध करवाने वाला हिमाचल प्रदेश देश का अग्रणी राज्य बनकर उभरा है जहां राष्ट्रीय स्तर पर 62 प्रतिशत लोगों को यह सुविधा मिल रही है तो वहीं प्रदेश में यह आंकड़ा 84 प्रतिशत है।

उन्होंने कहा कि प्रदेश के 20,118 राजस्व गावों को पानी उपलब्ध करवा दिया गया है। उन्होंने यह जानकारी भी दी कि प्रदेश सरकार शहरी क्षेत्र में 100 लीटर प्रतिदिन प्रति व्यक्ति पानी उपलब्ध करवा रही है तो वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में 70 लीटर प्रतिदिन प्रति व्यक्ति उपलब्ध करवाया जा रहा है जबकि राष्ट्रीय स्तर पर केवल 40 लीटर प्रतिदिन प्रति व्यक्ति यह उपलब्धतता है।

उन्होंने कंडईवाला, डाकरा, अमराईयों गांव के लिए 90 लाख रुपये की सिंचाई योजना को अमलीजामा पहनाने की घोषणा की। बर्मापापड़ी में पीने के पानी के लिए खराब पड़ी मोटरों को एक माह में बदलने की घोषणा भी की। कौलावालाभूड़ के लिए लगभग 2.62 करोड़ रुपय की अनुमानित लागत वाली सिंचाई योजना की डीपीआर बनते ही स्वीकृत करने की घोषणा की। मझाड़ा नदी पर पुल बनाने के लिए जिसकी डीपीआर लगभग सात करोड़ के आसपास बैठेगी, को नाबार्ड के माध्यम से स्वीकृत किया जायेगा। उन्होंने गुमटी गुज्जर बस्ती के लिए भी सिंचाई योजना हेतु धन उपलब्ध करवाने का आश्वासन भी दिया। उन्होंने जानकारी दी कि कौलावालाभूड़ में लगभग 80 लाख रुपय की लागत से बनने वाली पीएचसी का काम भी आरम्भ कर दिया गया है।

मुख्य संसदीय सचिव चौधरी सुखराम ने कहा कि प्रदेश सरकार ने अपने चार वर्ष के कार्यकाल में सिरमौर विशेषकर नाहन क्षेत्र की समस्याओं के हल के लिए विशेष प्रयास किये हैं जिसमें नाहन के लिए 53 करोड़ रुपय की पेयजल योजना व कॉलेज भवन का शिलान्यास आदि प्रमुख हैं।

शिमला जिले में पंजीकृत 4,97,203 मतदाताओं को फोटो पहचान पत्र जारी

शिमला जिला के सभी आठों विधान सभा निर्वाचन क्षेत्रों में कुल 4,97,203 मतदाता हैं जिनमें 2,60,468 पुरुष तथा 2,36,735 महिला व 2310 सेवा अर्हता मतदाता सम्मिलित हैं। सभी मतदाताओं को फोटो पहचान पत्र जारी किये जा चुके हैं।

जिला के समस्त आठों विधान सभा निर्वाचन क्षेत्रों की मतदाता सूचियों को विगत 5 जनवरी को अन्तिम रूप से प्रकाशित कर दिया गया है ये सूचियां आगामी विधान सभा चुनावों के दौरान प्रयोग में लाई जाएंगी। इन सूचियों को आम जनता के अवलोकनार्थ सभी एसडीएम, तहसीलदार व नायब तहसीलदारों के कार्यालयों में उपलब्ध करवा दिया गया है। इसके अलावा वैबसाईट http://ceo himachal. nic.in पर भी नाम की पुष्टि हेतु उपलब्ध हैं।

फोटोयुक्त मतदाता सूचियों के पुनर्निरीक्षण का कार्य प्रथम जनवरी 2012 की अर्हता तिथि के आधार पर पूर्ण किया गया है। पुनर्निरीक्षण के दौरान 18892 नये मतदाताओं के नाम दर्ज किये गये हैं तथा 3699 मतदाताओं के नाम मृत्यु/स्थान परिवर्तन या दोहरे पंजीकरण के कारण मतदाता सूचियों से काटे गये हैं।

जिला में अब 25 जनवरी 2012 तक सभी नये पात्र मतदाताओं को फोटो पहचान पत्र जारी किये जाएं, इसके लिये जिला निर्वाचन विभाग द्वारा 15 जनवरी 2012 तक विशेष अभियान चलाया गया है। इस दौरान सभी नये मतदाताओं को मतदाता सूची में सम्मिलित करने का प्रयास किया जायेगा। मतदाता सूची में नाम दर्ज करवाने के लिये अर्हता तारीख पहली जनवरी 2012 निर्धारित की गई है। इस तिथि को मतदाता की आयु 18 वर्ष हो जानी चाहिए। मतदाता सूची में नाम दर्ज करवाने के लिये फार्म-6 भरकर निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी अथवा मतदान केन्द्र पर प्रस्तुत किया जा सकता है।

खादी विषय पर पुस्तक का विमोचन

मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने गत दिनों शिमला जिला के जुब्बल क्षेत्र के श्री निरबीर लाम्बा द्वारा लिखित पुस्तक 'खादी एक समाज कल्याण' का विमोचन किया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि यह पुस्तक बुनकरों एवं हस्तशिल्पियों के लिए काफी उपयोगी सिद्ध होगी। उन्होंने आशा व्यक्त की कि यह पुस्तक लोगों में खादी के उत्पादों को लोकप्रिय बनाने में भी सहायक होगी। मुख्यमंत्री ने इस उपयोगी एवं सम्पूर्ण पुस्तक के प्रकाशन के लिए प्रकाशक के प्रयासों की सराहना भी की।

423 को मिला रोजगार

श्रम एवं रोजगार विभाग हिमाचल प्रदेश समय-समय पर प्रदेश के भिन्न-भिन्न भागों में रोजगार मेलों का आयोजन करता है। इन रोजगार मेलों के माध्यम से जहां एक ही स्थान पर कई नियोक्ताओं व रोजगार के इच्छुक आवेदकों को एकत्रित होने का अवसर मिलता है तो वहीं पढ़े-लिखे बेरोजगार युवाओं को योग्यता के अनुसार रोजगार चुनने के अवसर भी मिलते हैं। यह जानकारी श्रम आयुक्त एवं निदेशक श्रम एवं रोजगार विभाग श्री मोहन चौहान ने स्थानीय चौगान मैदान में रोजगार मेले का शुभारम्भ करते हुए दी। उन्होंने कहा कि इन रोजगार मेलों के माध्यम से जहां प्रदेश के युवाओं को प्रदेश में ही रोजगार के अवसर मिलते हैं तो वहीं सरकार द्वारा हिमाचलियों को निजी क्षेत्र में 70 प्रतिशत रोजगार के अवसर भी मिल रहे हैं। इस अवसर पर उप निदेशक रोजगार श्री मनोज तोमर ने बताया कि इस मेले में चण्डीगढ़ की एक व कालाअम्ब, पांवटा साहिब की 44 औद्योगिक इकाईयों ने भाग लिया। इसमें कुल 1,017 आवेदक पंजीकृत हुए व 423 आवेदकों को भिन्न-भिन्न पदों के लिए नियुक्ति पत्र दिये गये हैं।

न्यायमूर्ति वी.के. शर्मा द्वारा हि.प्र. उच्च न्यायालय के अतिरिक्त न्यायाधीश की शपथ ग्रहण

जस्टिस विनोद कुमार शर्मा हि.प्र. उच्च न्यायालय के अतिरिक्त न्यायाधीश नियुक्त किये गये हैं। मुख्य न्यायाधीश जस्टिस कुरियन जोसेफ ने गत दिनों हि.प्र. उच्च न्यायालय में जस्टिस शर्मा को एक सादे लेकिन गरिमापूर्ण समारोह में पद एवं गोपनीयता की शपथ दिलाई। इस मौके पर हि.प्र. उच्च न्यायालय के न्यायाधीश सर्वश्री आर.बी. मिश्रा, दीपक गुप्ता, वी.के.आहूजा, संजय करोल, कुलदीप सिंह, सुरेन्द्र सिंह तथा राजीव शर्मा उपस्थित थे।

न्यायमूर्ति वी.के. शर्मा को 7 जनवरी 2010 में हि.प्र. उच्च न्यायालय का अतिरिक्त न्यायाधीश नियुक्त किया गया था और अब पुनः उनकी नियुक्ति अगले दो सालों के लिये की गई है। 8 अगस्त 1952 को जन्में जस्टिस शर्मा ने कालेज स्तर तक की शिक्षा कांगड़ा जिला के बैजनाथ से पूरी की जबकि कानून की उपाधि उन्होंने हि.प्र. विश्वविद्यालय शिमला से प्राप्त की।

उन्होंने वर्ष 1976 में हिप्र उच्च न्यायालय से कानून की प्रेक्टिस शुरू की तथा उसके बाद अगस्त 1976 से जनवरी 1991 तक जिला न्यायालय धर्मशाला तथा उपमण्डल न्यायालय पालमपुर में अधिवक्ता के तौर पर कार्य किया। वर्ष 1985 से 1990 के बीच वह उत्तरी रेलवे तथा विभिन्न बैंकों के विधिक सलाहकार भी रहे। वह 1982-83 में पालमपुर बार एसोसियेशन के सचिव तथा 1989-90 के दौरान अध्यक्ष रहे।

जस्टिस शर्मा ने दो फरवरी 1991 में हि.प्र. उच्च न्यायिक सेवाओं में प्रवेश पाया तथा अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश नियुक्त हुए। वर्ष 1995 में वह जिला एवं सत्र न्यायाधीश बने। वह हि.प्र. उच्च न्यायालय के रजिस्ट्रार जनरल सहित विभिन्न पदों पर आसीन रहे। वह हिप्र औद्योगिक ट्रिब्यूनल एवं श्रम न्यायालय के प्रिजाईडिंग अधिकारी, हिप्र राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के सदस्य सचिव, जिला व सत्र न्यायाधीश वन तथा जिला उपभोक्ता फोरम शिमला के अध्यक्ष रहे।

हि.प्र. उच्च न्यायालय के रजिस्ट्रार जनरल डी.सी. चौधरी ने कार्रवाही का संचालन किया तथा भारत की राष्ट्रपति की ओर से जारी नियुक्ति सम्बन्धी वारण्ट व राज्यपाल हि.प्र. के आदेश पढ़े।

गिरिराज
हिमाचल की प्रगति और संस्कृति का दर्पण

क्षमा दोनों का भला करती है- क्षमा किये जाने वाले का भी और क्षमा करने वाले का भी। *–ला. रोशेफाल्ड*

आंगनबाड़ी कार्यक्रम

वर्तमान सरकार ने अपने विकास प्रयासों को मानवीय स्वरूप प्रदान करते हुए सामाजिक सेवा क्षेत्र को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान की है। सामाजिक कार्यों में आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं की भूमिका को अधिमान देते हुए सरकार ने आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं/सहायकों को अनेक सुविधाएं प्रदान कर इनका मनोबल बढ़ाया है। ये ग्राम स्तर पर स्वास्थ्य क्षेत्र में कार्यान्वित कार्यक्रमों जैसे टीकाकरण, जागरूकता अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। इसी तरह शिशुओं की देखभाल व उनकी पौष्टिक जरूरतों को समय पर पूरा करने, प्रसूति महिलाओं को जानकारी प्रदान करने में भी इनका कार्य अत्यंत उपयोगी है। इनकी सेवाओं को समझते हुए सरकार ने आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं एवं सहायिकाओं के लिए 'जीवन श्रीबीमा योजना' आरम्भ की है। इसके अंतर्गत दुर्घटना में मृत्यु होने पर 75 हजार रुपये, स्वाभाविक मृत्यु पर 30 हजार रुपये तथा बीमारी से मृत्यु होने पर 20 हजार रुपये की बीमा राशि का प्रावधान किया गया है। इस वर्ष से इनके मानदेय में बढ़ोतरी का निर्णय भी स्वागत योग्य है। अभी आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को 1800 रुपये तथा सहायिकाओं को 950 रुपये का मानदेय प्राप्त होता है। हाल ही में हुई मंत्रिमण्डल की बैठक में आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं/सहायकों के 357 नये पद भरने को स्वीकृति प्रदान करना एक और अहम फैसला है। शेष बचे गांवों में 83 आंगनबाड़ी केन्द्र/लघु आंगनबाड़ी केन्द्रों को खोलने के निर्णय से इनके कार्यक्रमों को सभी गांवों तक ले जाने में सहायता मिलेगी। इन नये पदों पर सिलाई अध्यापिकाओं को प्राथमिकता भी सराहनीय है। इस समय राज्य भर में 18 हजार आंगनबाड़ी केन्द्रों में लगभग 37 हजार के लगभग कार्यकर्ता सरकार के स्वास्थ्य, समाज कल्याण के कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक चला रहे हैं। इन नये पदों व नये केन्द्रों के खुलने से जहां इस कार्यक्रम को विस्तार मिलेगा वहीं शिशुओं की प्रारम्भिक देखभाल सुनिश्चित होगी। सरकार के ये कदम बच्चों के स्वर्णिम भविष्य को दर्शाते हैं।

आम आदमी को राहत

प्रदेश सरकार द्वारा 50 किलो सीमेंट के बैग की दरों में 25 रुपये कम करने से समाज का हर वर्ग लाभान्वित हुआ है। गौरतलब है कि केन्द्र सरकार ने सीमेंट को नियंत्रित वस्तुओं की सूची से बाहर रखा है, जिससे सीमेंट कम्पनियां अपने स्तर पर सीमेंट के मूल्य निर्धारित करने के लिए स्वतंत्र है। मुख्य मंत्री ने इससे पहले प्रधानमंत्री को पत्र लिख कर सीमेंट को नियंत्रित वस्तुओं की सूची में रखने की मांग की थी। सीमेंट के दामों में कमी से आम आदमी को राहत मिली है। सरकार का आम आदमी की तकलीफ को समझते हुए सीमेंट कम्पनियों के साथ बातचीत में उन्हें दाम कम करने के लिए सहमत करना, सरकार की आम आदमी के कल्याण को सुनिश्चित बनाने की वचनबद्धता को दर्शाता है। 25 रुपये की कमी से अवश्य ही इस महंगाई के दौर में आम आदमी को राहत मिलेगी।

सार्वजनिक सेवा प्रसारण का नेटवर्क-दूरदर्शन

विज्ञान के अद्भुत चमत्कारों में दूरदर्शन एक चमत्कार है जिसने घर के अन्दर या फिर हमारे दिलों में ऐसा स्थान बना लिया है जिसके बगैर आम जनमानस सोच भी नहीं सकता। आज के आधुनिक युग में यह मानव जीवन की दिनचर्याओं से जुड़ा एक अनिवार्य एवं विश्वसनीय वस्तु बन गया है जो मनोरंजन का प्रमुख साधन होने के साथ-साथ ज्ञान-विज्ञान एवं मानसिक विकास का अत्यंत उपयोगी एवं लोकप्रिय माध्यम भी है।

टेलीविजन यानी दूरदर्शन अर्थात दूर से देखना। एक ऐसी दूरसंचार प्रणाली जिसके द्वारा चलचित्र व ध्वनि को दो स्थानों के बीच प्रसारित व प्राप्त किया जाता है। साधारण अर्थ में दूरदर्शन का अभिप्राय है- खुला परिपथ अथवा प्रसारण। भारतीय सार्वजनिक सेवा प्रसारण का सबसे बड़ा नेटवर्क और स्टूडियो एवं ट्रांसमीटरों के आधारभूत संरचना के हिसाब से विश्व की सबसे बड़ी प्रसारण संस्था है।

दूरदर्शन की शुरूआत अत्यंत विनीत तरीके से एक परीक्षण के तौर पर दिल्ली में हुई और इसका पहला प्रसारण 15 सितम्बर, 1959 में हुआ था। आरम्भिक दिनों में दूरदर्शन से प्रतिदिन आधे घण्टे का प्रसारण हुआ करता था जो शैक्षिक एवं विकास कार्यक्रमों में रूप में होता था। नियमित सेवा का आरम्भ दिल्ली में सन 1965 से हुआ जो सन 1972 में मुम्बई और अमृतसर तक विस्तारित कर दी गई। 1982 के एशियाई खेलों के दौरान देश में प्रसारण क्षेत्र में बड़ी क्रांति आई और उसके पश्चात दूरदर्शन का इस तेजी से विकास हुआ कि आज लोगों के मनोरंजन एवं ज्ञान का प्रमुख साधन बन गया है।

1984 में दूरदर्शन पर पहला सोप ऑपेरा 'हम लोग' का प्रसारण हुआ जिसमें 156 एपिसोड लगातार 17 महीने तक प्रसारित किए गए जिसका आनन्द देश में 5 करोड़ दर्शकों ने उठाया था। उसके बाद एक के बाद एक कई सफल धारावाहिकों का प्रसारण हुआ जिनमें 'बुनियाद', 'ये जो है जिन्दगी', 'नुक्कड़', 'रामायण' तथा 'महाभारत' आदि प्रमुख हैं। आज भारत की 90 प्रतिशत से भी अधिक जनसंख्या तक दूरदर्शन 1400 ट्रांसमीटरों के माध्यम से अपने कार्यक्रम पहुंचाता है।

दूरदर्शन ने देश में सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन, राष्ट्रीय एकता को बढ़ाने और वैज्ञानिक रूचि, ज्ञान का प्रसारण, शैक्षिक कार्यक्रम और सामाजिक जागरूकता जैसे राष्ट्रव्यापी कार्यक्रमों को गति प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। सार्वजनिक सेवा प्रसारक होने के नाते इसका उद्देश्य अपने कार्यक्रमों के माध्यम से जनसंख्या नियंत्रण और परिवार कल्याण, पर्यावरण की सुरक्षा और पारिस्थितिकीय संतुलन, महिलाओं, बच्चों और विशेषाधिकार रहित वर्ग के समाज-कल्याण उपायों को रेखांकित करना है। इसका उद्देश्य खेलों तथा देश की कलात्मक और सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देना भी है।

आज दूरदर्शन पर सार्वजनिक प्रसारण के अतिरिक्त मनोरंजन और सामाजिक रूप से प्रासंगिक विभिन्न विषयों पर हिन्दी धारावाहिकों के अतिरिक्त क्षेत्रीय भाषा उपग्रह सेवाएं और क्षेत्रीय राज्य नेटवर्क विकासात्मक सामाचार, धारावाहिक, वृत-चित्र और ताजा घटनाक्रम एवं मामलों के कार्यक्रमों के साथ-साथ सामान्य सूचना, सामाजिक और अन्य बड़ी विधाओं के कार्यक्रम भी प्रसारित किए जाते हैं। इसके अतिरिक्त क्षेत्रीय भाषा उपग्रह सेवाएं और क्षेत्रीय राज्य नेटवर्क विकासात्मक समाचार, धारावाहिक, वृत चित्र, समाचार और ताजा मामलों के कार्यक्रमों के अतिरिक्त सामान्य सूचना, सामाजिक और अन्य बड़ी विधाओं के कार्यक्रम भी प्रसारित किए जाते है।

दूरदर्शन पर प्रसारित किए जाने वाले विभिन्न कार्यक्रमों का मुख्य उद्देश्य लोगों को भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक परिदृश्य की जानकारी प्रदान करना है। राष्ट्रीय प्रसारण में हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू और संस्कृत में समाचार, सामयिक विषयों पर फीचर, अन्तर्राष्ट्रीय महत्व के मुद्दों पर चर्चाओं के अतिरिक्त मनोरंजक कार्यक्रम, धारावाहिक, थियेटर, गीत-संगीत एवं नृत्य तथा फिल्मों का प्रसारण दूरदर्शन के संघटक हैं। स्वाधीनता दिवस, गणतंत्र दिवस समारोह, बजट प्रस्तुतिकरण और राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की अन्य घटनाओं का भी दूरदर्शन से सीधा प्रसारण इसकी मुख्य विशेषताओं में एक है।

आधुनिक युग में दूरदर्शन की पहुंच में एक बड़ा क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ है और यह इसरो और साईट कार्यक्रम के अन्तर्गत उपग्रह के जरिए राजधानी दिल्ली से निकलकर छोटे-छोटे गांवों की चौपाल तक पहुंच गया है जिसके परिणामस्वरूप आज यह भारत ही नहीं अपितु विश्व भर में सबसे अधिक लोकप्रिय हो गया है। अन्य क्षेत्रों की भांति संगीतिक क्षेत्र में भी यह महत्वपूर्ण साधन के रूप में उपलब्ध हुआ है। दूरदर्शन केन्द्रों द्वारा अनेक ऐसे कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता है, जिनका सम्बन्ध विशेष रूप से संगीत से है जो विद्यार्थी तथा शिक्षक दोनों के लिए लाभदायक हैं।

दूरदर्शन ने देश में सामाजिक- आर्थिक परिवर्तन, राष्ट्रीय एकता को बढ़ाने और वैज्ञानिक रूचि, ज्ञान का प्रसारण, शैक्षिक कार्यक्रम और सामाजिक जागरूकता जैसे राष्ट्रव्यापी कार्यक्रमों को गति प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। सार्वजनिक सेवा प्रसारक होने के नाते इसका उद्देश्य अपने कार्यक्रमों के माध्यम से जनसंख्या नियंत्रण और परिवार कल्याण, पर्यावरण की सुरक्षा और पारिस्थितिकीय संतुलन, महिलाओं, बच्चों और विशेषाधिकार रहित वर्ग के समाज-कल्याण उपायों को रेखांकित करना है।

● **सुखजीत कौर**

दूरदर्शन के सरकारी स्तर के चैनलों पर प्रसारित होने वाले ग्रामीण लोक सांस्कृतिक कार्यक्रमों में पिछड़ी जातियों के लोक गीत, लोक वाद्य तथा लोक नृत्य भी शामिल हैं। जिन कार्यक्रमों को छोटे-बड़े शहरों में रहने वाले जन-साधारण को देखने का कभी अवसर न मिला है, वे हमारी इन प्राचीन ग्रामीण धरोहर रूपी संगीतिक संस्कृति के अनमोल खज़ाने का ज्ञान एवं जानकारी घर बैठे ही प्राप्त करते हैं। वैसे भी हमारे क्षेत्रीय चैनलों द्वारा इन कार्यक्रमों का प्रसारण करने से हमारी लोक संस्कृति को बढ़ावा मिला है।

राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के शीर्ष कलाकारों के शास्त्रीय नृत्य एवं संगीत कार्यक्रम दूरदर्शन पर दिखाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त साहित्य, संगीत, चित्रकला, मूर्तिकला और वास्तुशिल्प जैसे शैक्षिक विषयों के कार्यक्रम भी लोगों को दिखाए जाते हैं। विभिन्न क्षेत्रीय चैनलों पर मुख्य रूप से भारत के प्रत्येक प्रांतों, जिनमें हिमाचल, पंजाब, हरियाणा, उत्तर-प्रदेश, बिहार, उत्तराखंड, बिहार, गुजरात, राजस्थान तथा मध्य प्रदेश आदि शामिल है, के ग्रामीण क्षेत्रों के लोकगीतों, लोकवाद्यों तथा लोक-नृत्यों के संगीतिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की समय-समय पर प्रतियोगिताएं करवाई जाती हैं, जिनको देखकर हमें अपनी भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता पर सर्वदा गर्व होता है।

दूरदर्शन पर राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के उच्चकोटि कलाकारों, साहित्यकारों के साक्षात्कार के रिकार्डिड अथवा उनका सीधा प्रसारण भी अपने आप में प्रशंसनीय प्रयास है क्योंकि उनके साथ गहन विषयों पर की गई चर्चाओं अथवा विचार गोष्ठियों के माध्यम से कला एवं साहित्य से जुड़े व्यक्तियों अथवा दर्शकों को कई महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त होती हैं। दूरदर्शन पर प्रसारित किए जाने वाले ज्ञान-विज्ञान, गीत-संगीत एवं नृत्य तथा शिक्षा एवं सामाजिक सरोकार के कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों अथवा संगीत से जुड़े लोगों को जहां शिक्षा, विकास एवं संगीत की जानकारी मिलती है, वहीं उनके संगीत शास्त्र सम्बन्धी ज्ञान में भी अभिवृद्धि होती है। इसके साथ ही संगीत के अखिल भारतीय कार्यक्रमों के अन्तर्गत देश को उच्चकोटि के कलाकारों से रूबरू होने एवं उनकी प्रस्तुतियां सुनकर खुशी का एहसास होता है। ऐसे कार्यक्रमों के प्रसारण से शास्त्रीय संगीत का प्रचार-प्रसार होने के अतिरिक्त भारत की अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित रखने का भी सुअवसर मिलता है।

आज देश में निजी चैनलों की एक बाढ़ सी आ गई है जिससे दूरदर्शन को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है क्योंकि इन चैनलों में कुछ तो चैनल अच्छे धारावाहिक एवं कार्यक्रमों का प्रसारण करते हैं लेकिन कुछ चैनल ऐसे हैं जो इतने स्तरहीन अथवा घटिया कार्यक्रमों का प्रसारण करते हैं जिन्हें परिवार के बीच में बैठकर देखने में शर्म महसूस होती है। इन चैनलों के कार्यक्रमों में ज्ञान-विज्ञान से सम्बन्धित विषयों में तथ्यपरक जानकारियों का अक्सर अभाव देखने को मिलता है।

यद्यपि दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले कार्यक्रमों में गम्भीरता, प्रामाणिकता एवं स्तरीयता का बेहतर प्रदर्शन होता है फिर भी इसके कार्यक्रमों को नया लुक और ताजगी देने के गंभीर प्रयास हो रहे हैं। आशा की जानी चाहिए कि नए, रोचक और ताजगी भरे कार्यक्रमों के प्रसारण से दूरदर्शन की लोकप्रियता में और बढ़ौतरी होगी।

कहना न होगा कि कृषि दर्शन, ज्ञान दर्शन, मेरे देश की धरती जैसे ज्ञानवर्द्धक व सूचनाप्रद कार्यक्रम के प्रसारण के साथ-साथ साफ सुथरे मनोरंजक व स्त्री-प्रधान कार्यक्रमों से अलग पहचान बनाने वाला दूरदर्शन आम दर्शक तक अपनी पहुँच बनाने में कामयाब रहा है।

जन संसद *जन संसद* *जन संसद*

हैण्ड पम्प से निकल रहा है गाद युक्त पानी

मैं गिरिराज के माध्यम से सिंचाई एवं जनस्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों का ध्यान जिला सोलन के अंतर्गत आने वाले नगाली पुल जहां पर स्वामी ऑटो केयर के द्वारा आईशर कम्पनी की वर्कशॉप का निर्माण किया गया है, यहां सैंकड़ों की तादाद में लोगों का आना जाना लगा रहता है। लेकिन यहां पानी की पर्याप्त व्यवस्था न होने से लोगों को खासी परेशानी झेलनी पड़ती है। हालांकि यहां पुल के साथ सिंचाई एवं जन स्वास्थ्य विभाग ने हैण्डपम्प स्थापित किया हुआ है। मगर पिछले काफी समय से इस हैण्ड पम्प से गाद युक्त पानी निकल रहा है जो कि पीने योग्य नहीं है। हालांकि इस बारे विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों को कई बार अवगत करवाया जा चुका है लेकिन समस्या आज भी ज्यों की त्यों बनी हुई है। विभाग के कर्मचारियों ने मात्र औपचारिकता निभाते हुए हैण्ड पम्प पर एक बोर्ड टांग दिया है जिस पर लिखा है, 'ये पानी पीने योग्य नहीं है।' मगर इसकी मरम्मत के बारे में नहीं सोचा।

अतः सिंचाई एवं जनस्वास्थ्य विभाग के स्थानीय अधिकारियों से आग्रह है कि उक्त हैण्ड पम्प की सुध ले ताकि लोगों को पीने का पानी उपलब्ध हो सके।

गुरबचन सिंह नालागढ़, सोलन

प्रदेशवासियों की जन समस्याओं को सरकार तक पहुंचाने में गिरिराज का जनसंसद कॉलम एक सशक्त माध्यम साबित हुआ है। गिरिराज के पाठकों से आग्रह है कि वे अपने क्षेत्र की समस्यायें हमें भेजें, उन्हें प्रकाशित कर सरकार तक पहुंचाया जाएगा। ध्यान रहे कि एक पत्र में केवल एक ही समस्या हो। निजी समस्या प्रकाशित नहीं की जायेगी।

–सम्पादक

कृषक मित्र

मधुमक्खियों का शत्रुओं से बचाव

डॉ. एस.डी. शर्मा
डॉ. जितेन्द्र कुमार

कई प्रकार के जानवर भी मधुमक्खी तथा उसके छत्ते को हानि पहुंचाते हैं। पर्वतीय क्षेत्रों में भालू का प्रकोप होता है जो शहद के लिए छत्तों को मधुमक्खी सहित खा जाते हैं। पाइन मार्टिन (गोठु) भी इसी तरह मधुमक्खियों के वंशों को नष्ट करता है। इसके अतिरिकत छिपकती तथा मेंढक भी मधुमक्खी को खाते हैं।

हमारे देश में मधुमक्खियों की विभिन्न प्रजातियां पाई जाती हैं। प्रजातियों में विविधता एवं जलवायु परिवर्तन के कारण मधुमक्खियों को अनेक प्रकार के शत्रु हानि पहुंचाते हैं। इसके अतिरिक्त मौन गृह में अनुकूल वातावरण मिलने से कीटों, शत्रुओं व अष्टपदियों का प्रकोप और भी बढ़ जाता है। अष्टपदियां, कुछ कीट, पक्षी व स्तनधारी प्राणी मधुमक्खियों के मुख्य शत्रु हैं। इन शत्रुओं के बारे में विवरण व नियंत्रण की जानकारी दी जा रही है।

अष्टपदियां: कुछ अष्टपदियां जैसे कि श्वास नली की अष्टपदी व बाह्य अष्टपदियां मधुमक्खियों की मुख्य शत्रु हैं।

श्वास नली की अष्टपदी (ऐकारेपिस वुड्डी)-यह अष्टपदी भारतीय (एपिस सिराना) एवं युरोपियन (एपिस मैलीफरा) दोनों जातियों की मधुमक्खियों को प्रभावित करती है तथा अन्य प्रजातियों में इसका प्रकोप अभी तक नहीं पाया गया है। यह अष्टपदी प्रौढ़ मधुमक्खी की श्वास नली को ग्रसित करती है तथा रानी, कमेटी व निखट्टू इसके प्रकोप के प्रति एक जैसे ही संवेदनशील है। यह अष्टपदी विश्व के सभी देशों में पाई गई है। भारतवर्ष में यह सर्वप्रथम भारतीय मधुमक्खी (ए. सिराना) में वर्ष 1957 में हिमाचल प्रदेश में पाई गई थी। इसके प्रकोप के कारण 30-40 प्रतिशत तक वर्ष में मर जाते हैं।

प्रौढ़ मादा अष्टपदी मधुमक्खी के शिशु कोष्ठ से निकलने के 24 घंटों के अंदर श्वास नली में प्रवेश कर जाती है तथा इसके 3-4 दिन पश्चात मादा अष्टपदी 5-7 अंडे देती हैं जिनसे 3 या 4 दिन बाद अष्टपदी की अभ्रक अवस्थायें निकलनी आरम्भ हो जाती हैं।

लक्षण-अष्टपदी से ग्रसित मधुमक्खियां एक या अधिक टांगों का पूरा प्रयोग नहीं कर पाती हैं और अपनी पिछली टांगों को खुजली करती रहती है। उनके पंख अंग्रेजी के 'K' अक्षर की तरह फैल जाते हैं और मधुमक्खियां छत्ते के द्वार पर समूहों में तथा छत्ते के सामने पौधों के तनों व घास से चिपटकर रहने लगती है। वे अधिक दूरी तक नहीं उड़ सकती है और उड़ान के समय वह गिर जाती है और रेंगना आरम्भ कर देती हैं। यह अवस्था तब आती है जब मधुमक्खी की श्वास नली में अष्टपदियों की संख्या 30 या उससे अधिक हो जाती है।

ग्रसित मधुमक्खियों का पेट फूल जाता है, उन्हें दस्त लग जाता है तथा मौन गृह के द्वार पर पीले धब्बों के रूप में इनकी विष्टा पाई जाती है। ग्रसित मौन छत्ता छोड़कर चौखटों के ऊपरी भाग पर, तले के ऊपर, अन्तर्पट के निचले भाग पर झुण्ड बनाकर बैठ जाती है।

मौन ढीली सी तथा अंगघात ग्रस्त हो जाती है तथा ब्रूड को पूरी तरह से नहीं ढक पाती और बिखरे हुए झुण्ड बनाती है।

रोकथाम व नियंत्रण-मधुमक्खियों द्वारा शहद की लूटमार को रोकें।

मरी हुई मधुमक्खियों को गड्ढा खोदकर दबा दें।

ग्रसित वंशों को स्वस्थ वंशों से काफी दूरी पर रखें तथा ग्रसित वंशों को गंधक जलाकर धुआं दें।

ग्रसित मौन गृह में 15-20 दिन तक लगातार फारमिक अम्ल (85 प्रतिशत) की 5 मिलीलीटर मात्रा से धूमन करें। इस रसायन की शीशी को जिसमें एक बत्ती डुबोई जाती है और उसका 2 सेंटीमीटर भाग शीशी के बाहर रखा जाता है ताकि रसायन धीरे-धीरे वाष्पों के रूप में निकलता रहे) आधार पटल पर, जहां बच्चे निकल रहे होते हैं रखा जाता है तथा हर 24 घंटों के पश्चात वह पुन: रसायन से भर दी जाती है।

बाह्य अष्टपदियां-यह अष्टपदियां मधुमक्खियों के शिशुओं को रक्त चूसकर हानि पहुंचती है। ये दो प्रकार की है-क) ट्रौपिलिलैप्स क्लेरी, (ख) वरोआ डिसट्रक्टर।

ट्रौपिलिलैप्स क्लेरी- यह अष्टपदी एपिस मैलीफरा मधुमक्खी की एक भयानक परजीवी बन चुकी है और इसके विस्तार में एक मुख्य बाधा है तथा इसके कारण 50 प्रतिशत तक मधुमक्खी शिशुओं की मृत्यु का होना आम बात है।

लक्षण-इस अष्टपदी के प्रकोप से छत्तों में मधुमक्खी का समजात (ब्रूड) छिद्रा हो जाता है तथा कई लाखों व प्यूपों के मर जाने से खाली कोष्ठ देखे जा सकते हैं। जिन शिशु कोष्ठों में टोपी लगी हो उनमें छोटे- छोटे छिद्र देखे जा सकते हैं। इस अष्टपदी के प्रकोप से मधुमक्खियों के शिशु प्यूपावस्था में ही मर जाते हैं और यदि उनसे प्रौढ़ मधुमक्खी बन भी जाये तो उसमें विभिन्न प्रकार की विरूपियां जैसे कि विरूपित पंख एवं टांगें, एक या अधिक टांगों का न होना, कम वजन, उदर का छोटा होना इत्यादि होती है। ऐसी मधुमक्खियां उड़ नहीं पाती हैं और वे मौन गृह के अंदर ही छत्तों पर रेंगना आरम्भ कर देती हैं और ऐसी मक्खियां उपचारिका मोनो द्वारा छत्ते से बाहर फैंक दी जाती हैं। इस अष्टपदी के प्रकोप से मधुमक्खियों की संख्या कम होती जाती है और यदि ध्यान न दिया जाये तो वंश समाप्त भी हो जाते हैं।

नियंत्रण-1. रासायनिक रूप से शुद्ध गंधक 500 मिलीग्राम प्रति चौखट की दर से हर 4-5 दिन के पश्चात मौन गृह में धूड़ें। यह धूड़न 3-4 बार करें जिससे अष्टपदी की रोकथाम हो जायेगी।

2. फारमिक अम्ल (85 प्रतिशत) की 5 मिली लीटर मात्रा (जैसा की श्वास नली की अष्टपदी के लिए बताया गया है) का प्रतिदिन 12-15 दिन तक लगातार प्रयोग करने से इन अष्टपदियों की रोकथाम संभव है।

3. बिना रसायनों के प्रयोग के भी इस अष्टपदी का नियंत्रण किया जा सकता है। यदि मौन वंश को कुछ समय के लिए शिशु रहित किया जा सके तो यह नियंत्रण संभव है। मधुमक्खी गृह में यह तो रानी को 14-15 दिन के लिए एक पिंजरे में बंद कर दिया तो अष्टपदी को आहार लेने के लिए शिशु नहीं मिलते। यदि सभी ब्रूड की फ्रेमों को मौन गृह से हटा दें और अन्य नई साफ फ्रेमें दे दी जायें और नई रानी पैदा होकर अण्डे देने लगे तो भी अष्टपदी भूख से मर जाती है।

वरोआ डिसट्रक्टर-यह अष्टपदी काफी बड़े आकार की होती है जो लम्बाई में 1.1-1.2 मि. मीटर व चौड़ाई में 1.5-1.6 मि. मीटर तक है। यह प्रौढ़ या शिशु मधुमक्खियों के शरीर के दो खण्डों के बची में से रक्त चूसती है। यह अष्टपदी कुछ वर्ष पूर्व तक भारतवर्ष में ए. मैलीफरा की महत्वपूर्ण शत्रु नहीं थी जबकि पश्चिमी देशों में यह मौन पालन के लिए एक भयंकर खतरा बनी रहती है। पिछले कुछ वर्षों में यह भारत मुख्यत: पंजाब, हरियाणा, व हिमाचल प्रदेश में ए. मैलीफरा मधुमक्खियों को काफी हानि पहुंचाते देखी गई हैं।

मोमी पतंगे-मोमी पतंगों का प्रकोप सभी मौन प्रजातियों में होता है। ए. इंडिका, ए. डोरसेटा व ए. फ्लोरिया प्रजातियां प्रोपोलिस इकट्ठा नहीं करती हैं परन्तु ए. मैलीफरा अत्याधिक प्रोफोलिस इकट्ठा कर मौन गृह में जमा कर लेती है। कुछ प्रोपोलिस मोमी छत्तों पर भी लगा देने से छत्ते सख्त हो जाते हैं और इसके कारण मोमी पतंगों का प्रकोप कम होता है।

नियंत्रण-मोमी पतंगों की समस्या मौन पालकों की लापरवाही के कारण होती है। इस पतंगे से बचाव के लिए आवश्यक है कि वंश (गृह) में आवश्यकता से अधिक छत्तों वाली चौखटें न हों। शहद निष्कासन के बाद ज्यों- ज्यों मधुमक्खियों की संख्या कम होती जाती है, उसके साथ ही खाली छत्तों को हटाकर ठीक ढंग से रखना चाहिए।

चींटियां-चींटियां की कुछ प्रजातियां मौन बक्से के अंतर पटल पर सुरक्षित स्थान पाकर वर्षा ऋतु में अपना घर स्थापित कर लेती हैं। ये बक्से (गृह) में पड़े छेद या दरारों में से अंदर घुसकर भी मधु चुराकर खाने का प्रयास करती हैं। काले बड़े चींटों का भी कभी- कभी भयंकर प्रकोप हो जाता है।

नियंत्रण-चींटियों के नियंत्रण के लिए लम्बे समय तक असर छोड़ने वले कीटनाशक जैसे मिथाइल पैराथियॉन (2 प्रतिशत फोलीडॉल धूल) या मैलाथियॉन (51 प्रतिशत धूल) का धूड़ा चींटी उपनिवेशों के इर्द-गिर्द डाला जा सकता है।

परभक्षी बर्रे-बर्रे की कई जातियां मधुमक्खियों का परभक्षण कर हानि पहुंचाती हैं। इन सब ततैयों में से वैस्पा मैन्डीना सबसे हानिकारक है। ये ततैये मौन गृह के प्रवेश द्वारा के पास बैठकर मधुमक्खियों को काटते हैं और कुछ ही देर में ढेर लगा देते हैं। यह जाति केवल पहाड़ी क्षेत्रों में ही पाई जाती है।

नियंत्रण एवं रोकथाम-वसंत ऋतु के आरम्भ में सुषुप्तावस्था से निकली गर्भित मादा को मार दें। इसको मारने का अभिप्राय है एक भावी छत्ते को मारना। वर्षा व शरद ऋतु में जब इनका प्रकोप अधिक हो उस समय मौन पेटिका (गृह) का प्रवेश द्वार छोटा कर देना चाहिए ताकि ततैय आसानी से अंदर न जा सके। इनको पकड़ने के लिए मौन पेटिका में जाल (ट्रैप) लगाया जा सकता है।

परभक्षी पक्षी-कई प्रकार के पक्षी उड़ती हुई मधुमक्खियों का शिकार करते हैं। ये इन मधुमक्खियों के आसपास मंडराते रहते हैं और प्रवेश द्वार से आने जाने वाली कमेटियों के लिए बहुत घातक सिद्ध होते हैं।

इन शत्रुओं के अतिरिक्त कई प्रकार के जानवर भी मधुमक्खी तथा उसके छत्ते को हानि पहुंचाते हैं। पर्वतीय क्षेत्रों में भालू का प्रकोप होता है जो शहद के लिए छत्तों को मधुमक्खी सहित खा जाते हैं। पाइन मार्टिन (गोठु) भी इसी तरह मधुमक्खियों के वंशों को नष्ट करता है। इसके अतिरिक्त छिपकती तथा मेंढक भी मधुमक्खी को खाते हैं।

गेहूं के पीला रतुआ रोग की पहचान व प्रबन्धन

डॉ. धनवीर सिंह
डॉ. अखिलेश सिंह
सविता शर्मा

पीला रतुआ

इस रोग को धारीदार रतुआ या हरदा भी कहते हैं। यह सबसे हानिकारक रतुआ है। उत्तरी भारत में सबसे पहले इस रतुआ का प्रकोप होता है। पीला रतुआ हिमालय के निचले पहाड़ी और तराई क्षेत्रों में बहुत अधिक पाया जाता है। अन्य दो रतुआ (काला व भूरा) कवकों की अपेक्षा यह अधिक ठण्डे मौसम को सहन कर सकता है। हिमाचल प्रदेश में पीला रतुआ का प्रकोप दिसम्बर के अंत या जनवरी से शुरू हो जाता है। इस रतुआ के बिजाणु पीले रंग के होते हैं इसलिए इस रोग को पीला रतुआ कहते हैं। हिमाचल प्रदेश, जम्मू, पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, उत्तरी राजस्थान तथा उत्तराखण्ड के मैदानी तथा तराई क्षेत्र आदि इलाकों में भी इस रोग के द्वारा गेहूं की फसल को बहुत अधिक हानि होती है।

पहचान

रोग के लक्षण पीले रंग की धारियों के रूप में पत्तियों पर दिखाई देते हैं, जिनमें से पिसी हुई हल्दी जैसा पीला चूर्ण निकलता है तथा पीला पाऊडर जमीन पर भी गिरा देखा जा सकता है। ऐसे खेत में जाने पर कपड़े भी पीले हो जाते हैं। यदि यह रोग कल्ले निकलने की अवस्था में या इससे पहले आ जाये तो फसल को भारी हानि होती है। ये धारियां वास्तव में यूरिडिया हैं। पत्तियों में यह यूरीडिया धारियों में बनते हैं। मुख्यत: ये धारियां पत्तियों पर ही पायी जाती हैं, परन्तु रोग की व्यापक दशा में पत्तियों के आवरण, तनों एवं बालियों पर भी देखी जा सकती है। रोग से प्रभावित पत्तियां शीघ्र पककर सूख जाती हैं। तापमान बढ़ने पर (मार्च के उत्तरार्ध) पत्तियों की निचली सतह पर मंद काले रंग के टेल्यूटोस्फोट बनते हैं। इस रतुआ का प्रकोप अधिक ठण्ड, बदली और नमी वाले मौसम में बहुत ही संक्रामक होता है। पीला रतुआ गेहूं में बालियां लगने से पहले ही प्रकट होता है। अत: नुकसान अधिक होता है। रोगी पौधों की बालियों में लगे दाने हल्के एवं सिकुड़े हुए होते हैं। रोगी पौधों की बढ़वार कम होती है, जिससे उपज घट जाती है।

इस रोग का प्रकोप प्रदेश के कांगड़ा, मण्डी, ऊना, सोलन व सिरमौर जिलों में अधिक होता है।

प्रबन्धन

- सदैव रोग रोधी किस्मों का ही प्रयोग करें। क्षेत्र में अनुमोदित प्रजातियों को ही उगाएं तथा ध्यान रखें कि दूसरे क्षेत्रों के लिए अनुमोदित प्रजातियों को न उगायें। बुआई समय पर करें। इस समय रोग रोधी प्रजातियों की संख्या कम है। अत: इस रोग से बचने के लिए दवा का छिड़काव करें।
- फसल का निरीक्षण बड़े ध्यान से करें। ऐसा दिसम्बर माह के मध्य से ही शुरू कर देना चाहिए। विशेषकर वृक्षों के आसपास या पापुलर वृक्ष के बीच उगाई गई फसल पर अधिक ध्यान दें।
- फसल पर इस रोग के लक्षण दिखने पर दवाई का छिड़काव करें। यह स्थिति अक्सर जनवरी के अंत में या फरवरी के आरम्भ में आती है। परन्तु रोग यदि इससे भी पहले दिखाई दे तो छिड़काव कर दें।
- छिड़काव के लिए प्रौपीकोनाजोल 25 ई.सी (टिल्ट 25 ई.सी) या टैबूकोनाजोम 250 ई.सी. (फॉलीकर 250 ई.सी.) का 0.1 प्रतिशत की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें। एक बीघे के लिए 60 मिलीलीटर दवा 60 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। फसल की छोटी अवस्था में पानी की मात्रा 40 लीटर प्रति बीघे रखी जा सकती है।
- रोग के प्रकोप तथा फैलाव को देखते हुए दूसरा छिड़काव 15-20 दिन के अंतराल पर करें।
- छिड़काव सही ढंग से करें ताकि दवा पौधों के निचले तथा ऊपरी भागों में अच्छे ढंग से पहुंच जाये।
- छिड़काव के लिए पानी की उचित मात्रा का प्रयोग करें। अधिक या कम मात्रा में प्रयोग करने से छिड़काव का पूर्ण लाभ नहीं मिल पायेगा।
- छिड़काव दोपहर के समय करें।
- यदि छिड़काव के बाद दो घंटे के अंदर बारिश आ जाती है तो मौसम ठीक होने पर दोबारा छिड़काव करें क्योंकि इतने समय में पूरी तरह से पौधों में प्रवेश नहीं कर पाती है और वर्षा के पानी में धुल जाती है।
- पी.बी.डब्ल्यू. 343 ,पी.बी. डब्ल्यू. 502 पी.बी.डब्ल्यू. 373, यू.पी. 2338, एच.डी. 2687, एच.डी. 2329, डब्ल्यू.एच. 711 नामक किस्मों की बुआई न करें क्योंकि इन किस्मों में पीला रतुआ का प्रकोप अधिक होता है।

मुख्य अनुमोदित प्रजातियां

एच.पी.डब्ल्यू. 155, एच.पी. डब्ल्यू. 236, एच.पी.डब्ल्यू. 147, एच. पी.डब्ल्यू. 249, वी.एल. 907, एच. एस. 507, राज 3765, डी.बी.डब्ल्यू. 17, पी.बी.डब्ल्यू. 550, वी.एल. 892, एच.पी.डब्ल्यू. 211, राज 3777, डब्ल्यू.एच. 1080, एच.डी. 2969, डी. बी.डब्ल्यू. 621.50, एच.डी. 2985, एच.डी. 2987

कृपया
सेंटरस्प्रेड
देखें

कृपया
सेंटरस्प्रेड
देखें

कृपया
सेंटरस्प्रेड
देखें

कृपया
सेंटरस्प्रेड
देखें

कृपया
सेंटरस्प्रेड
देखें

कृपया
सेंटरस्प्रेड
देखें

कहानी

इंतजार में घर

मैं एक ऐसा अभागा घर हूं, जो एक आस में जिन्दा हूं कि मुझे बनाने वाले मुझमें बसकर चले जाने वाले एक न एक दिन तो जरूर मेरे पास आयेंगे। मेरी सुध लेंगे। मेरे मालिक जिसने ये घर यानि के मुझे बड़े चाव से बनाया और मेरा नाम भी बड़े चाव से रखा, 'राणा निवास'। घर के एक कोने में छोटा सा मंदिर जिसमें सुबह-शाम एक दादी पूजा- कीर्तन करती तो मेरा मन भी शांत और प्रसन्न रहता। रसोई घर में बने खाने की खूश्बू से मेरा मन तृप्त हो जाता था। दीवारों की रंग-बिरंगी सजावट में मैं कितना सुन्दर युवा लगता था। तीज-त्योहार में खुशियों का माहौल होता मुझे कितना सजा-सजा कर रखते थे। मैं अंदर- बाहर से बहुत खूबसूरत लगता था। आंगन में रंग-बिरंगे फूल खिलते थें फल-सब्जियों के बागीचे भी खूब हरे-भरे लगते थे।

मालिक के बच्चे मेरी ही दहलीज पर घुटनों के बल गिरते- उठते बड़े हुए। उन्होंने चलना सीखा, पढ़ना-लिखना सीखा और अपनी मंजिल तक पहुंचे। मुझे भी उनकी उन्नति पर गर्व होता था। कभी-कभी गम के पल भी आये घर में

● कमलेश कुमारी

कोई बुजुर्ग-बच्चा बीमार पड़ जाता तो मैं भी व्याकूल हो उठता था। मुझे भी उनके स्वस्थ होने की चिंता दिन- रात सताने लगती थी। जिस मालिक ने मुझे बड़े चाव से बनाया और ईंट-मिट्टी को लीप-पोत कर एक आलीशान घर का स्वरूप दिया। एक दिन अचानक वह इंसान मुझे और अपने परिवार को इस दुनिया में अकेला छोड़कर चला गया। मालिक के स्वर्ग सिधारते ही मानो बाकी सदस्यों के दिल कैसे बदल गये। उनकी मां और दादी बेटे-बहुओं की प्रतिदिन की नोक-झोंक से पिसकर रह जाती थीं।

फिर अचानक, एक दिन ऐसा भूचाल आया जिसकी मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी। दो दिन से देख रहा था। एक-एक सैल्फ से बढ़िया-बढ़िया सामान गायब हो रहा था। अच्छे-अच्छे बिस्तर-चादरें सब बिस्तर बंद में बंध गये थे और अब दरवाजे पर ताला भी लगने वाला था। इस तरह मुझे अकेला छोड़कर सब प्रदेश जा बसे। मुझे उन सब की बहुत याद आतीं मैं खून के आंसू रोता हूं। जब तक मालकिन और दादी जिन्दा थीं तो पांच-छह महीने बाद मेरी देखभाल कर जाती थी। दरवाजे का ताला खुलते ही मुझे लगता कि बस आज ही मैंने खुल कर सांस ली हो। मेरे कलेजे में ठण्ड पड़ जाती थी जिस तरह मुझे उनकी याद आती थी। उसी तरह उन्हें भी मेरी याद बहुत आती थी। दादी और मालकिन को मैंने आपस में बीते दिनों की बातें करते कई बार सुना था। बातों ही बातों में उनकी आंखें नम हो जाती थीं। क्योंकि उनके जीवन की सारी खुशियां, खट्टी- मीठी यादें मुझसे ही जुड़ी थीं।

परन्तु दादी और मालकिन के देहांत के बाद उनके बेटों और बहुओं ने मानो मुझसे नाता ही तोड़ लिया था। उन्होंने अपनी जन्मभूमि को ही भूला डाला था। मुझे भूला डाला था। अब तो मेरा वो हाल है, 'न मरता हूं, न जिन्दा हूं।' मेरे चारों तरफ बाहर कांटों भरी झाड़ियां उग आई हैं। जो बाग-बागीचे कभी फल-फूलों से हरे-भरे रहते थे अब वहां जंगल बन गये हैं। मेरी दीमक लगी दीवारें, टूटती खिड़कियां, चरमराते दरवाजे, मकड़ी के जालों से उलझी छत। अपना ये भयंकर रूप-करूप देखकर मैं स्वयं भयभीत हो जाता हूं। वर्षों से मेरे कान तरस रहे हैं, कमरे मे बने मंदिर में कोई भजन करे तो मैं सुनूं...रसोई में खाना बने तो मैं उसकी खुश्बू का आनन्द लूं...नन्हें-मुन्ने बच्चों की किलकारियां आंगन में गूंजे तो मैं भी हंस लूं...। रास्ते से गुजरते मुसाफिर मुझ पर बड़ी दया दिखाते हैं। 'बेचारा ये घर... क्या हालत हो गया है इसका...।'

मेरे आस-पास बने घर मेरा उपहास उड़ाते हैं। 'क्यों राणा निवास तुझे बहुत अहंकार था न अपने ऊपर। कभी तू सबसे सुन्दर घर हुआ करता था। पर आज तेरी वो जवानी, तेरी चमक-दमक, तेरे वो लोग कहां गये? तुझे छोड़कर। अब तू कितना भद्दा लगता हैं धरती पर बोझ समान।'

सबके ताने सुन-सुनकर मेरे कान पक गये हैं। अब मैं और सहन नहीं कर सकता। मुझमें और सहन शक्ति नहीं है। हे भगवान, मैं बस इतना चाहता हूं कि कभी तो कोई मेरी सुध लेने आये। कब से मेरी आंखें उनका रास्ता देख रही है। मुझे पहले जैसा स्वरूप देगा। वो पहले जैसा जीवन, वो खुशियों भरा आंगन, वो दीवारों पर रंगीन सजावट। इंतजार में दिन, महीने और साल बीतते चले जा रहे हैं और अब तो मैंने किसी के लौटने की उम्मीद भी खो दी है। फिर भी मुझे उनका न जाने क्यों इन्तजार है।

वसंत पंचमी पर

सरस्वती

बुद्धि-विवेक की लौ जगाती।
ज्ञान की देवी यह कहलाती॥
श्वेत वस्त्रों की धारिणी।
वाग्देवी है वीणावादिनी॥
ज्ञान-विज्ञान की प्रदाती।
शोक-चिन्ता यह मिटाती॥
हंसवाहिनी भी यह कहलाती।
पद्मासन पर पैर जमाती॥
पुस्तक, शंख, वीणा-माला।
हाथ पकड़ करे उजाला॥
जो भी इसकी पूजा करता।
फल भक्ति के वह है चखता॥
'इड़ा' भारती से रखे नाता।
रूप इसका सबको सुहाता॥
वाणी इसकी नाद कहलाए।
वीण अद्भुत संगीत सुनाए॥
सर्वकलाएं यह निखारे।
'प्रसाद' इसके चरण पखारे॥
पूजन इसका है हितकारी।
माने इसको जगती सारी॥

राम प्रसाद शर्मा 'प्रसाद'

अपार अलौकिक आनन्द की अनुभूति है शून्य

जीवन त्रिकोण चक्र में रहता है। मनुष्य का जीवन त्रिधाराओं के प्रवाह में बहने वाला जीवन होता है। सर्वप्रथम जन्म, जीवन, मरण से गुजरता है, साथ ही बाल्यावस्था, युवावस्था के क्रम से आगे बढ़ता है और साथ में भूतकाल, वर्तमान एवं भविष्य की चुनौतियों का सामना कर रहा होता है, तो उधर सुबह, दोपहर, सायंकाल का भी ध्यान रखना होता है। किन्तु मैं समझता हूं कि एक और त्रिधारा की प्रवाहमन जीवन लक्ष्य धारा भी सर्वदा चुनौती बनकर मनुष्य के सामने रहती है। वह शून्य (0) एक (1) और दस (10) की है। चूंकि मनुष्य इस संसार में कुछ करके दिखाने के लिये आया है और उसको परम पिता परमेश्वर ने केवल भोग भोगने के लिए नहीं कुछ न कुछ करने के लिए यहां भेजा है। इसलिए उसको अन्य जीवन जंतुओं से अलग सोचने समझने व कुछ करने की पहचान दी है और विश्व के तमाम मानव वैज्ञानिकों ने भी इस बात को माना है कि मनुष्य जीवन कुछ न कुछ करने के लिए मिला। इसलिए वह चाहे तो चन्द्रलोक, मंगल, लोक पाताल लोक अथवा धरती पर कुछ करके दिखाये ऐसी सार्थक कल्पना ही नहीं अपितु रचना मनुष्याकृति बनाने वाले सोच समझकर के की है।

तभी तो कहा है कि चौरासी लाख जन्म योनियों में मनुष्य जन्म दुर्लभ माना गया है। मनुष्य को चेतन-अवचेतन दोनों अस्त्र-शस्त्र कुदरत ने दिये हैं। अब वह आगे चलकर जो बनना चाहे, वह बन जाये। वह ऋषि-मुनि बन जाये अथवा मान प्रतिष्ठा वाला, शीर्षस्थ व्यक्ति बन जाये, अथवा फिर डाकू, चोर, हत्यारा, बलात्कारी, अत्याचारी, भ्रष्टाचारी बन जाये।

ऐसा संभवतः मेरे विचार में सृष्टि रचनाकर्ता की रचना है। जिसके लिए निम्नांकित आयाम अर्थात् सिद्धांत अपनाने पड़ेंगे। जैसे क्रमशः हम (0) होने पर विचार करते हैं तो मैं समझता हूं शून्य का होना बहुत बड़ी तपस्या है। आप सभी कुछ जानते हुए भी अनजान से बने रहते हैं। इसको ही बार- बार पूछते व कहते रहते हैं कि यह क्या है? तुम्हारे पिता कौन हैं, माता जी कहा हैं? इत्यादि-इत्यादि। अर्थात सबकुछ जानते हुए भी अनजान बनकर ही सांसारिक आपदाओं, दुःखों, संघर्षों और तमाम कठिनाइयों को पार करना भी शून्य हो जाना है।

न केवल सन्यासी बनकर अथवा ब्रह्मचारी बनकर ही शून्य बन जाना

● शास्त्री दीनानाथ गौतम

होता है। अतः स्वयं अपनी अन्तरात्मा को जगा करके तमाम सांसारिक सुख-दुःखों का उपयोग भी करना और मिथ्या संसार की गतिविधियों से भी अवगत रहना ही शून्य हो जाना है। चाहे वह विद्वान हो, वैज्ञानिक हो अथवा किसान व मजदूर हो अर्थात जो अपने आपको पहचानेगा, अथवा बाहरी तमाम इच्छाओं को समेटकर अन्तर्मुखी हो जाता है, वही मनुष्य संसार के रहस्य को जानने में समर्थ होता है। जो केवल कल्पना की उड़ान में होता है अथवा ईर्ष्या-द्वेष द्वन्द्वात्मक लहरों की चपेट में होता है वह अज्ञानी अर्थात भौतिकता की चकाचौंध से परेशान होता है, वह शून्य के गर्भस्थ जो रहस्य है उनको भली भांति नहीं जानता व पहचानता है।

यही कारण था कि स्वामी विवेकानन्द ने अमेरिका के शिकागो विश्वविद्यालय में भी शून्य पर अपना भाषण देकर विश्व के बुद्धिजीवियों को चौंका दिया था कि शून्य, शून्य (जीरो) नहीं? शून्य एक अपार अलौकिक आनन्द की अनुभूति व समस्त अग-जग को जानने का नाम ही शून्य है। शून्य का अभिप्राय: योगिजनों का ज्ञानवान होना, वैज्ञानिकों का किसी भी खोज की तह तक पहुंचाना, किसी रहस्य तक चले जाना एवं कलाकार साहित्यकार, शिल्पकार का सिद्धहस्ता अर्थात कला कौशल पूर्ण हो जाना भी शून्य हो जाना है।

जो आदमी जितनी गहराई में अपने विषय को लेकर जाता है, वही उसका शून्य हो जाना सफलता का प्रतीक है। अतः शून्य तक पहुंचने के निरन्तर अभ्यास एवं दृढ़ संकल्प तथा निष्ठावान क्रियशीलता की जरूरत है।

मेरे विचार में जो शून्य हो गया वह अपने लक्ष्य को सोच समझ के साथ पा गया। समझो। इसमें लेशमात्र भी संदेह नहीं रह जाता है। यदि ऐसा नहीं कर सकते हैं तो फिर दूसरा उपाय एक अर्थात् (01) होना है। आप राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री अथवा संत महात्मा, कलाकार, साहित्यकार एवं शिल्पकार, कथाकार, डॉक्टर, इंजीनियर, प्राध्यापक बन जाइये, अपने क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित कर दीजिये। आप एक समाज के लिए उदाहरण बन जायें तो भी जीवन सार्थक बन जाता है, समाज में इतिहास पुरुष बन जाता है जैसे स्वतन्त्रता के सिपाही, सेना के सैनिक बलिदान देकर ही इतिहास के पन्नों में अंकित हो जाया करते हैं। अथवा वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं के द्वारा व शोधकर्ता शोधार्थी बनकर देश प्रदेश तथा विश्व गिनिज बुक में अपना नाम लिखवाते हैं।

इससे आगे फिर तीसरा विकल्प रह जाता है दस (10) नम्बर में शुमार होना और दस नम्बर के काम करते रहना जिसमें भ्रष्टाचार, अनाचार एवं दुराचार- कदाचार सभी आते हैं। इसके अलावा जघन्य अपराध, हत्याएं, बलात्कार, अत्याचार मनुष्य से लेकर कीट पतंग तक दुःख पहुंचाना इत्यादि कुकर्म कीजिये, नम्बर दस का खिताब पाइये।

क्या आप जानते हैं?

भारतीय ने विकसित की अगली पीढ़ी की कम्प्यूटर चिप

आईआईटी, खड़गपुर के पूर्व छात्र, भारतीय मूल के अमेरिकी श्री राज दत्त ने ऊर्जा की बचत करने वाली अगली पीढ़ी की कम्प्यूटर चिप विकसित की है। उन्होंने इस चिप का प्रदर्शन 9 अक्तूबर, 2011 को वाशिंगटन में किया। यह चिप कम्प्यूटर प्रोसेसर से न केवल 90 प्रतिशत कम बिजली खपत करता है बल्कि 60 प्रतिशत अधिक गति से भी चलता है। श्री राज दत्त के अनुसार सेमी कंडक्टर चिप के बीच होने वाला डॉटा ट्रासफर इलेक्ट्रॉन की सहायता से होता है। अब यह फोटॉन से होगा, जो हल्का होता है। आकार और वजन में हल्की चिप बिजली की खपत कम करती है, क्योंकि फोटॉन हीट जेनरेट नहीं करते और इसलिए इन्हें ठण्डा करने की आवश्यकता नहीं होती। यह बैडविड्थ की क्षमता बढ़ाएगी जिससे प्रोसेसिंग पॉवर और स्पीड भी बढ़ेगी।

1. अनुच्छेद 352 के तहत प्रथम बार राष्ट्रपति द्वारा कब राष्ट्रीय आपातकाल की उद्घोषणा की गयी थी?
2. ज्ञानपीठ पुरस्कार किस क्षेत्र को दिया जाता है?
3. प्रिज्म से गुजारने पर प्रकाश का कौन सा रंग सबसे अधिक विचलन दर्शाता है?
4. जोड़ पर यूरिक एसिड क्रिस्टलों का एकत्र हो जाना किस बीमारी का संकेत है?
5. किसने कहा था कि निर्धनता अपराध और क्रांति की जननी है?
6. किसने पहली बार महिलाओं को मताधिकार देने की वकालत की?
7. भारत में सबसे बड़ी मस्जिद कहां है?
8. नरोरा परमाणु प्लांट किस राज्य में है?
9. पंचायती राज व्यवस्था की स्थापना के लिए किसकी अनुशंसा की गई थी?
10. स्वदेशी आंदोलन सबसे पहले कब प्रारम्भ हुआ?
11. विश्व का कपास का सबसे बड़ा निर्यातक देश कौन सा है?
12. भारतीय स्टेट बैंक द्वारा देश में पहला तैरता हुआ एटीएम कहां स्थापित किया गया था?
13. द लॉस्ट चाइल्ड के लेखक कौन हैं?
14. किसने अपने अभिलेख सर्वप्रथम संस्कृत भाषा में बनवाए?
15. व्यस्क मनुष्य में कितनी हड्डियां होती हैं?

प्रस्तुति-नर्बदा कंवर

उत्तर-1. 26 अक्तूबर, 1962 को, 2. साहित्य, 3 बैंगनी, 4. गठिया, 5. अरस्तू, 6. जे.एस. गिल, 7. भोपाल में, 8. उत्तर प्रदेश, 9. 1957 की बलवन्त राय मेहता समिति की रिपोर्ट द्वारा, 10. बंगाल विभाजन के विरूद्ध आरम्भ किये गये आंदोलन के समय, 11. भारत, 12. कोच्चि में, 13. मुल्कराज आनन्द, 14. रूद्र दामन से, 15. 206.

बाल कहानी

बकरी का दूध

बच्चों आज एक बिल्कुल सच्ची कहानी तुम्हें सुना रही हूं।

यह कहानी मेरे नाना के नाना ने अपने नाना से सुनकर मेरे नाना को सुनाई थी। और मेरे नाना ने जब मुझे सुनाई तो कोई कारण नहीं कि मैं इस कहानी को झूठा मानूं।

मेरे नाना के नाना के नाना एक बहुत बड़े जमींदार थे। कोई चालीस-पचास गांवों के छोटे-मोटे राजा थे। बड़े-बड़े अंग्रेज अफसरों के साथ खाना खाते थे। सभी उनके लंगोटिया यार। एक बार एक अंग्रेज गवर्नर इंग्लैंड गया। चलते समय जमींदार साहब से बोला, 'वेल जिमींदार टूम अमारा बोट आच्छा डोस्ट हाय, टुमारे के वास्टे क्या लाने मांगटा?'

अब जमींदार साहब को दुनिया की अजीबोगरीब चीजें जोड़ने का बड़ा शौक था। वे हंस कर बोले कि हमने सुना है कि इंग्लैण्ड में ऐसी बकरियां होती हैं जिन्हें दुहने की जरूरत नहीं होती है। उनके थनों में एक ढक्कन लगा होता है, जिसे खोलने पर जितना दूध चाहो निकाल लो, फिर ढक्कन बंद। बस वैसी ही बकरी लाइए।

गवर्नर बहुत हंसा, 'वेल जिमींदार टूम बोट चालाक हाय, हमारा देश का वेटरीन चीज मांगटा है। कोई बाट नाय, हाम टुमारे के वास्टे वो भी लायेगा।'

चुनांचे गवर्नर साहब जब इंग्लैण्ड से लौटकर आये तो साथ में एक बकरी भी लेकर आये। नीले व सुनहरे रंग की बकरी किसी परी की भांति सुन्दर दिखती। जमींदार साहब को तो वह इतनी प्यारी हो गई कि जैसे अफसर अपने कुत्ते को साथ लिये फिरते, वैसे ही वे अपनी बकरी को।

जब वे सुबह-सुबह टहलने के लिए निकलते तो बकरी उनके साथ घूमने निकलती। दो नौकर उसकी सेवा में लगे रहते। पर फिर भी बकरी का दूध निकालने की आज्ञा किसी को नही थी। जमींदार साहब के बच्चे तक अपने गिलास लेकर सुबह बैठते, जमींदार साहब खुद ढक्कन खोलकर सबको दूध निकालकर देते थे।

हालत यहां तक पहुंच गई कि अगर जमींदार साहब को किसी काम से अदालत भी जाना पड़ता तो वे अपनी बकरी को अपने साथ अदालत में ले जाते। बयान देते समय उनकी बकरी उनके साथ कटघरे में खड़ी रहती। रात

● परिधि जैन

में सोते तो बकरी का स्पेशल बिस्तर उनके बिस्तर के पास लगता और उसके गले के पट्टे की जंजीर उनकी चारपाई से बंधी रहती और उनका कमरा चारों तरफ से बंद रहता। जमींदार साहब को बड़ा डर था कि कहीं उनकी बकरी कोई चुरा न ले जाये।

अब एक बार की बात है, जमींदार साहब की पत्नी अपने बच्चों के साथ अपने मायके गई थीं। एक रात जमींदार अपने कमरे में बंद सो रहे थे। नौकर-चाकर सब अपने-अपने घरों में चले गये थे। तभी न जाने कैसे क्या हुआ कि बकरी के थन का ढक्कन खुल गया। ढक्खन खुल गया तो दूध बहने लगा। दूध बहता रहा, जमींदार सोते रहे। जमींदार सोते रहे, दूध बहता रहा। बह-बहकर वह एक कमरे से दूसरे कमरे में, तीसरे कमरे, चौथे कमरे यानी सारे कमरों में, बरामदे में और बड़े आंगन में भर गया। घर की एक-एक चीज दूध में तैरने लगी। थाली-लोटा, कटोरी-कटोरा, मेज-कुर्सी सब कुछ नाव बन गये। वाह, क्या नजारा होगा? जमींदार फिर भी सोते रहे और तब तक सोते रहे जब तक उनका पलंग भी नाव की तरह तैरता बंद दरवाजे पर टक्करें न मारने लगा।

लिहाजा किसी तरह जमींदार साहब की नींद खुली तो जमींदार साहब हक्का-बक्का। दूर-दूर तक दूध का समुद्र लहरा रहा था। पहले तो समझे कि सपना है। पर जब असली बात का पता चला तो घबराकर उठ बैठे। तैरती हुई बकरी को उठाकर अपने पास बैठाया और जल्दी से ढक्कन खोजकर कस कर लगा दिया। अच्छा यह हुआ कि ढक्कन भी पास ही तैर रहा था, नहीं तो मुसीबत हो जाती।

ढक्कन लगाकर वे बकरी की तरफ से निश्चिंत हुए। पर इतने दूध का क्या हो, इसकी चिंता हो गयी। दूध मिट्टी से गंदा हो गया था, सो पीने के काम का भी नहीं रह गया। फिर पीने के काम का भी होता तो क्या उतना दूध पीना दो-चार शहर के आदमियों के भी बस का था?

किसी तरह दूध के समुद्र में तैरते जमींदार आये। अब तक नौकर- चाकर भी जाग चुके थे। जमींदार की हालत देख सब खड़े के खड़े रह गये। तब जमींदार चिल्लाये, 'कमबख्तो, देखते क्या हो। मेरे पचास गांवों के सारे भिश्तियों को बुलाओ, शहर से बड़ी बड़ी टंकियां मंगवाओ। लढ़ियां मंगवाओ। जल्दी करो, मेरा घर दूध में डूबा जा रहा है।'

दसों दिशाओं में नौकर- चाकर भागे और दोपहर होते होते सारा सामान हाजिर। अब भिश्तियों ने अपनी मशकों में भर-भर कर दूध टंकियों में भरना शुरू किया। हजारों टंकियां भर गयीं, पर दूध समाप्त नहीं हुआ। भिश्तियों ने वह दूध जमींदार के चावल और गेहूं के खेतों में डाला। कहते हैं, उस साल गेहूं और चावल एक ही फसल में बोया गया। चुनांचे खेत पानी के बजाय दूध में डूबे रहे।

खैर, जमींदार साहब बड़े खुले दिल के थे। उन्होंने ट्रेनों से, लढ़ियों से, घोड़ों से, गाड़ियों से- किसी भी प्रकार वह दूध पूरे भारत के खेतों में डलवाया। अपने गांव के खेत तो उन्होंने उस दूध से सिंचवाये ही।

उस बार जो फसल हुई, सो क्या कहें। एक-एक चीज का वर्णन करना तो मुश्किल है, पर इसी से अंदाजा लगा लो कि उस साल जो गेहूं- चावल पैदा हुआ, उसका एक-एक दाना मुर्गी के एक-एक अंडे के बराबर था।

पंद्रह-बीस दाने गेहूं के पिसवाओ, तो पूरा परिवार पेट भर कर खा लेता। चावल तो साबुत बनाना ही मुश्किल था। उसे तो कूट कर बनाना पड़ता था। मेरे नाना कहते हैं, पर फिर भी लोग उस साल रोटी-चावल खाने को तरस गये। मालूम है क्यों? जो रोटी बनाओ, सो पूरी बन जाती और जो चावल बनाओ, सो खीर बन जाती।

नाना के नाना के नाना की कहानी तो खत्म हो गई पर एक भेद की बात मेरे नाना ने बताई, 'बेटा जैसे मां के दूध का असर बच्चे पर रहता है, वैसे ही इंग्लैण्ड की बकरी का दूध हमारे भारत की मिट्टी में मिल गया है। भले ही अंग्रेज चले गये हों, पर जब तक इस मिट्टी मे दूध का असर है, हमारी चाल- ढाल, हमारी बोलचाल और पहनने- ओढ़ने में अंग्रेजियत का रंग छाया रहेगा।'

सत्य कथा

साहसी धावक

टेरी फाक्स कैनेडा का निवासी था। पढ़ने-लिखने में तेज। स्वभाव से शर्मिला। घुंघराले बालों वाले टेरी फाक्स का व्यक्तित्व बहुत आकर्षक था। एक बार वह भयंकर रूप से बीमार पड़ा। उसे कैंसर ने घेर लिया था। कैंसर था उसकी टांग में। उसके जीवन की रक्षा के लिए डॉक्टरों ने उसकी एक टांग ही काट दी। इस तरह बेचारा टेरी फाक्स युवावस्था में ही अपंग हो गया। टेरी में अदम्य साहस था। उसने जीवन में बहुत से सपने संजोये थे। वह केवल विकलांग बनकर जीना नहीं चाहता था। कैंसर रोग ने उसके मन में कैंसर रोग से पीड़ितों के लिए ममता पैदा कर दी। उसने निश्चय किया कि 'मैं कैंसर पीड़ितों और ऐसे ही दूसरे असाध्य रोगियों के लिए धन संग्रह करूंगा।' वह चाहता था कम से कम दस लाख डॉलर इकट्ठे करे। उसने तय किया कि वह एक टांग से ही अपने देश की पूर्व से पश्चिम तक की दूरी दौड़कर पूरी करेगा।

अप्रैल 1980 में टेरी ने पूर्वी छोर से दौड़ने का श्रीगणेश किया। दिन पर दिन बीतते गये। वह सुबह उठता। अपनी दौड़ आरम्भ कर देता। लड़खड़ाते, अजीब तरह से उछलते और एक टांग से कूदते हुए भी वह अपनी यह अनोखी दौड़ जारी रखे हुए था। अनेक बार ट्रक और मोटर चालकों ने उसका मजाक उड़ाया। कई बार तो रास्ते चलते लोगों के धक्कों से वह गिरा भी, मगर उसने साहस नहीं छोड़ा।

एक टांग उसकी नकली थी, इसीलिए ऊंचे-नीचे रास्तों पर उसे दौड़ने में काफी कष्ट होता था। वह रास्ते

● कैलाश

टेरी के निधन पर कैनेडा सरकार ने विशेष आदेश देकर राष्ट्र ध्वज झुका दिया। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। पर टेरी फाक्स जैसा वीर युवक भी वहां पहले कहां हुआ था।

में रूक-रूककर लोगों से धन भी इकट्ठा करता रहता था। इसी तरह टेरी फाक्स ने ओटावा की सीमा पार की। टोरंटो की सीमा से भी वह आगे निकल गया। राजधानी में गवर्नर जनरल और प्रधानमंत्री से उसकी भेंट हुई। टेरी ने बाद में टोरंटो की सीमा पार करते हुए, वहां उपस्थित प्रशंसकों को बताया, 'मुझ जैसे अपंग के लिए यह दौड़ बड़ी कठिन है। मैं कष्ट उठाकर जो धन इकट्ठा कर रहा हूं, उससे इस देश के सैंकड़ों कैंसर पीड़ितों को लाभ पहुंचेगा।'

टेरी पश्चिमी क्षेत्र के आधे रास्ते पर पहुंचा तो हांफने लगा। उसका रोग बिल्कुल नष्ट नहीं हुआ था। जहां उसकी कृत्रिम टांग जोड़ी गई थी, वहीं कैंसर फिर बढ़ने लगा। फिर भी टेरी अपने कार्य को अधूरा नहीं छोड़ना चाहता था। धीरे-धीरे कैंसर फैलकर उसके फेफड़ों तक आ चुका था। वह निरंतर खांसता हुआ भी अपनी मंजिल की ओर दौड़ता रहा। यह दौड़ तब तक जारी रही, जब तक टेरी को उसकी इच्छा के विरूद्ध स्ट्रेचर पर लेटाकर अस्पताल नहीं पहुंचा दिया गया। टेरी की हालत बहुत गंभीर हो गई थी। वह उठकर चल फिर भी नहीं सकता था। इस साहसी युवक ने चौदह महीने लगातार दौड़कर 3400 मील का लम्बा सफर पूरा किया था।

टेरी का जीवन चुक रहा था, मगर अपने अद्भुत कार्य से उसने अपना लक्ष्य ही पूरा नहीं किया, इससे आगे बढ़कर भी दिखा दिया। उसने करीब ढाई करोड़ डॉलर इकट्ठे किये।

टेरी के निधन पर कैनेडा सरकार ने विशेष आदेश देकर राष्ट्र ध्वज झुका दिया। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। पर टेरी फाक्स जैसा वीर युवक भी वहां पहले कहां हुआ था।

गणतन्त्र दिवस पर

ऐसा मेरा देश

जिसकी खातिर सुबह सुनहली कुंकुम लाती,
जिसकी खातिर दोपहरी पंखा झलती है।
सांझ मिलन के फूल लिए स्वागत को आती,
भरा-पूरा आकाश लिए रजनी मिलती है।

दिनकर जिसके लिए दिवस भर जलता रहता,
और चन्द्रमा साथ सितारे अनगिन रखता।
कभी भी हो दिशा-दशा पर मेरा भारत
हर सूरत में सब देशों से ऊंचा दिखता।

सागर-पर्वत-धरती-अम्बर-वर्ष-मास-दिन,
जिसके यश को कहते-कहते नहीं अघाते।
षट ऋतुएं कहती हैं जिसकी गौरव गाथा,
निर्झर-ताल-नदी-नद-पनघट गीत सुनाते।

ऐसा मेरा देश, यहां की बात अनूठी,
यह तो सदा-सदा से निर्माणों का घर है।
यह तो कारीगर है श्रम का और स्वेद का,
यह तो पावन पंचशील का पंचम स्वर है।

-डॉ. तारादत्त 'निर्विरोध'

बोधकथा

अधिकारी

एक बार एक महात्मा किसी राजा की नगरी में आये। बड़े ज्ञानी और तपस्वी थे वे। सारी नगरी को उन्होंने अपने उपदेशों से मोह लिया। धीरे-धीरे उनकी ख्याति राजमहल तक पहुंची। राजा उनके दर्शन करने आया। उसने महात्मा से निवेदन किया, 'महाराज, मुझे भी उपदेश दीजिये।'

महात्मा बोले, 'आप राजा हैं, साधारण ढंग से तो आपको उपदेश दिया नहीं जा सकता। आप एक ऐसा मकान बनवाइए जिसका एक ही द्वार हो।' राजा ने आदेश जारी कर दिया। जब मकान पूरा हो गया तो राजा ने महात्मा से कहा, 'महाराज, मकान तो तैयार हो गया। अब कृपया अपना वचन पूरा कीजिये।' इस पर महात्मा बोले, 'अभी कुछ काम बाकी है। कारीगरों को मेरे पास भेज दो।'

कारीगर आ गये तो महात्मा ने उनसे कहा कि सारे मकान में इस तरह खम्भे लगा दो कि उनके बीच थोड़ी-थोड़ी जगह ही बचे। महात्मा का आदेश होते ही मकान में असंख्य खम्भे बना दिये गये। फिर महात्मा ने कहा, 'राजन, बैठिये, ताकि मैं आपको उपदेश दे सकूं।' राजा ने निवेदन किया, 'महाराज, यह मकान तो खम्भों से भरा है। मैं इसमें कहां बैठ सकूंगा।'

महात्मा बोले, 'इसी प्रकार राजन आपका मन भी भीतर से विषय विकारों और राज-काज की चिंताओं से भरा पड़ा है। वहां हमारा उपदेश किस तरह बैठ सकता है? अत: जैसे इस मकान में बैठने के लिए कुछ खम्भे गिराना जरूरी है उसी प्रकार आप पहले अपने मन को साफ करके उपदेश लेने के अधिकारी तो बनिये। जब आपके मन में उपदेश के लिए स्थान बन जायेगा तो कोई भी उपदेश स्वयं ही उस स्थान में निवास कर लेगा। उपदेशक चाहे मैं होऊं या कोई भी हो।'

-अर्चना सौगानी

रंग भरो

-सर्वजीत

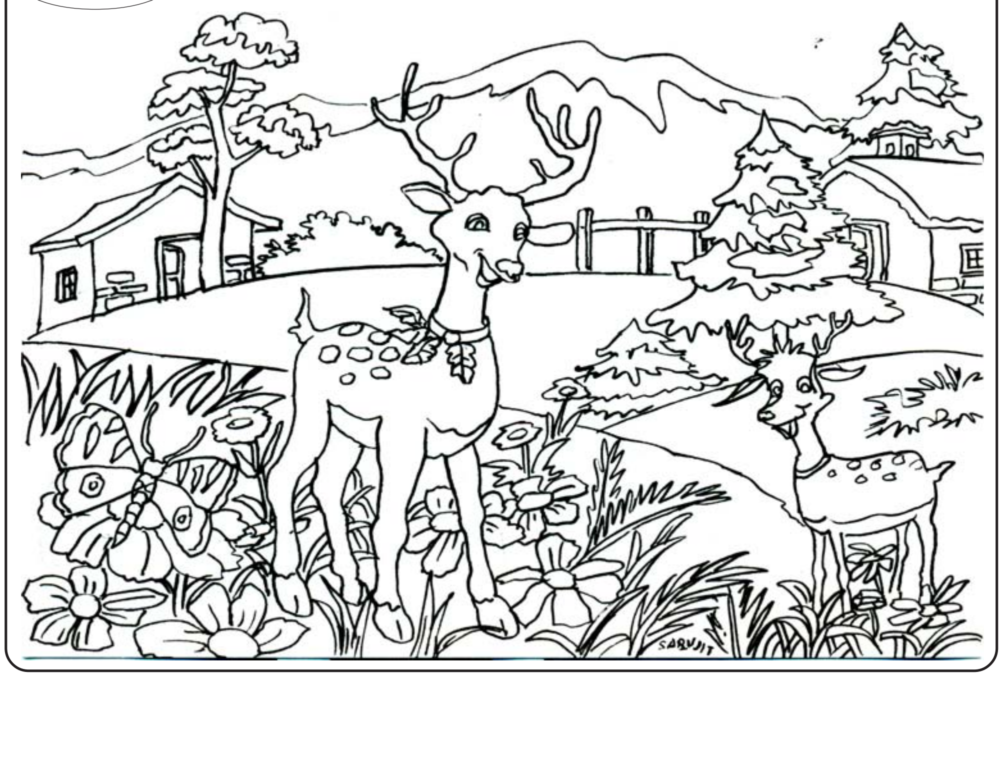

पहाड़ी भाषा कनै साहित्य लोक मंच

गिरिराज साप्ताहिक शिमला, 18–24 जनवरी, 2012

कहाणी

लेहफ

✍ कुलदीप चंदेल

बाहर अंगने च लछमने अग बालूदी थी होर से सेकया करदा था। थोड़ी देरा बाद तिसदी लाड़ी राधा बी आई के अग सेकने लगी पेई। से रोटियां पकाई आई थी। बालक रोटी खाई बैठे थे।

"लेहफ कढी देना था पेरिया ते बाहर। ठंड उतरी आई हो।"

लछमने लाड़िया जो गलाया।

"क्या कढना लेहफ? लेहफ थोड़ी रहूदा से तां लोगड़ बनूदा।"

कुछ देर से चुप रेही होर दुबारा तुनकी के बोली, "हर बार बोलदे लेहफे दा रूं पंजयाना। पर न तां नवां रूं लेई होया होर न ही ऐ पुराना लोगड़ पंजयाई होया करदा। कई साल होई गए ऐहड़ा सुनदे पेही अगले साल पंजयांगे। पर से अगला साल पता नी कदी औणा?"

"क्या करूं अड़िए? होर खर्चे ही नी पूरे होंदे। लेहफ तेहड़ी के किआं पंजयाऊं? हर साल सोचीं दा पर गुंजाईश ही नी होंदी।"

"से तां कदी होनी ही नी।"

"तां क्या करूं? डाका मारूं? चोरी करूं? बड़े मुश्कलें घरे दा खर्च चलाऊंदा।"

लाड़े दी गल सुनी के राधा चुप होई गई। थोड़ी देरा बाद बोली, "इस बार बी सयाला इस लोगड़े लेहफे च ही कटना पौना।"

लछमन चुप रेहा। से उठी के गुआनी खा जो चली गया। तिसजो अपनी गरीबिया जो देखी के रोना आई गया। काफी देर से रोंदा रेहा। तां जे तिसदा रोई राई के गुब्बार बैठी गया तां से हलका होई के अखीं पूंजी के फेरी वापस चली आया। हुण से अग सेकने नी बैठया। सिधा रसोई चली गया। रसोई जाई के तिनी चले च पहले मुंह हथ तोहे होर फेरी लाड़िया जो हक पाई, "रोटी खाई लै आइके।"

"आई।" हक सुनी के तिसा जवाब दितया था।

रोटी खांदी हान तिनी बोलया, "बालक सेई गए। इनहा उपर ओढन बछान उढ़ाई ते थे।"

"खरा कित्तया।"

"अगे जो कपाहे बीजंगे इक खेते च। घरे दा रूं ही हाई जांगा लेहफ लफोट परने जो।" लछमने हौले जे गलाया।

"किती पजदी कपाह? पैहले बी तां बीजी थी।"

"क्या पता अगे जो पंजी जाओ। सदा थोड़ी इक जा समां रैंदा।"

"चलो, करी लैंगे कोशिश। पाइया अध किलो बीऊ बथेरा हा।"

राधा हुण हथ तोही के चुली लगाई लेई थी। लछमन बी रोटी खाई बैठया।

रोटी राटी खाई के से लाड़ा लाड़ी थोड़ी देर अग सेकने लगी गए। उथी ते उठे सिधे अपने बिस्तरे पर आई गए। सारे दिने दे शकूए थे। काहण तिनहा जो निंद पेई कोई पता नी चलया।

सवेरा उठी क लछमने गुआनी ते पशुआं दा गोहा गोबर चकया होर डल भरी के खेतां च पाई आया। रसते च बयूले दे डाले पर लौंकुआं दी बेल चढ़ूदी थी। औंदा औंदा अठ दस लौंकू तोड़ी लयाया। टब्बरे जो सब्जी बी तां खुलानी थी।

लछमने दी लाड़िया बोलया, "पीहण रखूदा पयाहणे जो। मशीना छड्डी आओआ।"

"खरा।" तिनही पीहण चकया होर चली पेआ मशीना जो।

मशीना दा मालक देवी राम चक राहया करदा था। तिनही बोलया, "संजकिया लेई जायां आटा। पैहले दरड़ पीना राहणे ते बाद। फेरी करना आटे दा कम।"

"चल कोई नी। संजकिआ आई जांगा।"

ऐहड़ा बोली के से वापस घरा जो चली पया। रसते च चलदे चलदे से सोचया करदा था पेही जे परमात्मा टैमे टैमे पर बरसना करी देआ करो तां जमींदारा दे खेत्रां च कुछ न कुछ पजया ही करना। बखैर बरखा ते कुछ नी होंदा। अचानक तिसदी नजर बाटा पऊदे सौ रूपइए दे नोटे पर पेई। तिनी झटपट चकया से होर जेबा पाया। खुश होई गया लछमन।

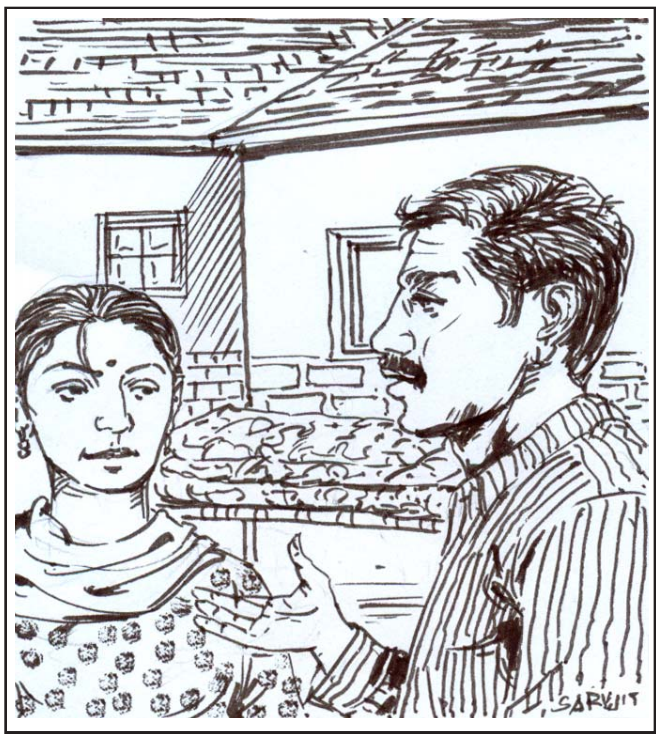

घरे जाई के लछमने राधा जो गलाया, "लेफ पंजयाई लैंदे। से औदे यूपी दे पहिए। घर घर जाईके लेफे दा रूं बी पिंजदे। भरी भी दिंदे होर नगंदी बी देंदे।''

"हाये पैसे जेबा च?"

"हां, हाये। सौ रुपइया मिलया बाटा।"

"तां ऐहड़ा करा खंड खतम ही खंड लेई आओआ। कपड़े धोने दा साबन खतम हा। साबन बी औना। चा पती बी लयाई देआ। लेहफ फेरी पंजयाई लैंगे। ऐ समान तां जरूरी हा। घरे कोई आई जाओ तां चा तां पलयाने ही पौंदी। बुरा लगदा जे कोई बगैर चाई ते चली जाओ।"

राधा दी गल सुनी के लच्छमन चुप होई गया। सोचया क्या था होया क्या? लगदा ऐ लेहफ इहां ही रैहणा। ऐ नी पंजोणा। लाडी बी सच्ची ही पाही। घरे औदे जो जे चा बी नी पलयाई हो तां क्या फायदा इस जीऊणे दा।

थोड़ी देरा बाद लच्छमने हटिया ते समान लयाई के लाड़िया के पकड़ाई ता। तूहप पुहली गऊदी थी से बी तिनी लयाई ता। आखर संजा सवेरा तूहप तां बालना ही ठीकरां के। पुखे रही जांगे पर तूहपे बगैर नी रैहणा।

"पिंकी बोलया करदी थी तिसा टूरनामेंटां खेलने जाणा। बूट चांहिदे तिसा जो। कने पंजा सौ रुपइए बी देणे पौणे। दौड़ा च से अपने जिले फसट आऊदी। क्या पता स्टेट टूरनामेंटां च बी तिसा दा नंबर पेई जाओ?" राधा हौले जे गलाया था।?

"क्या करना? लैणे पौणे बूट। चाहे कुछ करना पवे। नहीं तां तिसा दा दिल टुटी जाना। अजकल सरकारा खेलां च अव्वल रैहने औलयां जो नौकरी देनी बी शुरू कितूदी।" लच्छमने बीड़ी मुंहे कने लगांदे लगांदे बोलया था।

संजके बेले लच्छमने इक छेलू बेची ता। इस छेलुए दा तिसजो हजार रुपइया मिलया। तिनी अपनी कुड़िया पिंकिया जो बूट बी लेई ते होर टूरनामेंटां खातर दो सौ रुपइया जेब खर्च बी देई ता। पिंकी खुश थी।

लच्छमन पिंकिया जो स्कूले तक छड़ी आया था। उथी होर बी बथेरी कुड़ियां टूरनामेंटां जो जाने खातर खड़ूदिआं थिआं। औंदे औंदे से लेहफ पिंजने औलयां जो बी सौग्गी लाया था। लाड़िया जो तिनी ऐ गली है नी दस्सी थी।

अगले दिन से भइये लेहफ पिंजने आई गए। लच्छमने दो लेहफ बाहर अंगने च कढ़ी के रखी ते। दो घंटे च लेहफां दा लोगड़ पिंजी पांजी के तिनहें लेहफां च भरी ता। नगदी बी दिते तिनहे लेफ। पैसे देई के से तिनही वापस पेहजी ते। राधा खुश थी। कइयां सालां बाद लेहफ भरोए। छेलू बेची के गरज पूरी होई गई।

कबतां

माऊ रा सम्मान

✍ कश्मीर सिंह

आंऊ मिणतां करना चांह्गा
अपणे सारे म्हाचलियां कने
सैह्-सब
सुद्ध म्हाचली बणन

अपणे-सहित-समाज
बाजे-गाजे साज समान बद्धान
अपणे लोक गीत सुणन-गान-सुणान
वारे त्यौहारे
अपणे देशी लोक्कल-लिक्कड़लान

सब जह्णे
अपणे-अपणे
दिल-दम्माक खोलण
अपणी संस्कृति-सभ्यता
अग्र-ई-अग्र
छैल-छैल बणान-सजान
अपणी मां बोल्ली-बोलण
अपणी मांऊ रा
करन खरा मता सम्मान।

तमाशा

✍ राजीव कुमार 'त्रिगर्ती'

कल घुला दे थे बान्दर
जमणुए पर
जमणुआं ताएं
लोक हस्सा दे थे, चाटिया बज्जा दे थे,
कल घरूंगा दे थे कुत्ते
कने घुला दे थे दंदे मुच्चे
नाले बक्खें
खूने ने लमडोया
छेलुए दे हड्डुआं ताएं
लोक हस्सा दे थे, चाटिया बज्जा दे थे,
कल मारेआ था मिरगे कक्कड़
घुला दे थे झुडेआं च दो मिरग
कक्कड़े दे ताजा मास्से ताएं
लोक हस्सा दे थे, चाटिया बज्जा दे थे,
कल घुलना है माह्णुआं
सड़का च
रोटिआं ताएं
कुण हसगा कुण बजगा चाटिया
पेटे तांइये खोणे दा तमाशा
कल तमाशा नी रैह्णा
जरूरत बणी जाणा।

लेख

स्याणया रीयां ग्लाऊरियां

✍ एस.आर. आजाद

ठीक ही बोलूरा भई स्याणयां री ग्लाई ने आमले री खट्याई पिच्छे ते ही स्वाद देंदी। आमला खाणे पर पैह्ले तां खट्टा लगदा। थोड़ीया देरा बाद ए मिट्ठा स्वाद देंदा। स्याणयां री ग्लाउरी गल्ल बी पैह्ले तां कईयां जो ठीक नी लगदी, कदी-कदी बुरी बी लगदी। पर तां जे रजल्ट खराब औंदा ताह्ण पता चलदा जे स्याणे ठीक ही बोल्या था। इस करी के स्याणयां री गल्ल मन्नणी चाहिए कन्ने तिस पर अमल करना चाहिए।

जनानां री ही गल्ल लओ। बऊ केह्ड़ी ल्याउवी चाहिए। स्याणे बोल्दे जे चिक्क ल्याउणी मठ्याने री, ने बऊ ल्योओणी घरयाने री। मतलब ए भई घर लिपणे ने चुल्हा-चौका मठ्याने री या चिक्का ने ही साफ-सुथरा हुंदा। हर किती रीया चिक्का ते नीं। ईयां ही अच्छे घरयाने री बहू ल्योओणी चाहिए, तिसारे प्योकिए सरीफ आदमी हो। से ही घर सम्हाली सकदी, बड्डेयां री सेवा-टैह्ल कन्ने घरें औणे वाल्यां री खातर-सेवा करी सकदी। कई बार आदमी ब्योत्तरी जनानां हुंद-सुंद्यां दूजी जनाना ली औंदा। स्याणे बोल्दे जे सौका तां कन्दा पर लिख्उरा नी झलोंदा, जिउंदे-जतागदे री तां गल्ल ही जाणे देओ। चौबी घंटे पई रैंदी घरा च छिंज। पैह्लकी ब्योतरी जनानां लक्का पर हत्थ रखी के त्हाड़े मारी-मारी के एह्ड़ीया-एह्ड़ियां गल्लां सुणादी सौकणी जो जे सुणने वाले बी कन्नें गुठियां देई लैंदे। असां रे पहाड़ां च क्वालियां री चढ़ाई बड़े-बड़ेयां री नां करवाई देंदी। जीजा- साली जे किती गप्पां मारने बैठी गए तां नी उठणे जो करदा जिऊ चाहे कुछ हुई जाओ। ए ठीक ही बोलूरा जे क्वालिया रे मुंड्डा ने सालीया रे बक्खा नी बैठणा चाहिए। क्वालिया रे मुंड्डा जरा बसौंवें जो बैठे लोड़िए फेरी नी क्वालिया पैंते पर पैर रखणे जो मन करदा। एह्ड़ा ही सोचदे रईंदा जे थोड़ा ज्या होर बसंवीं, लईए-थोड़ा ज्या होर बसंवीं लईए। ओ ईयां ही रही जांदे बैठुरे। स्याणयां सबी-किजी ते कीमती दस्सुरी इज्जत। ल्हड़ा-फड़ा भावें कोई सारा लई जाओ। ग्वाउरीयां चीजां देर-सबेर, थोड़ीयां-बौह्त बणी जांदीयां। पर इज्जत जे इक बार चली जाओ तां दबारा नी बणदी। तां ही बोल्दे जे नक्का री रही जाओ तां पिच्छे ते भावें सारा ही लई जाओ। सबनीं जो अपणी-अपणी पई रैहंदी, दूजे रा नी कोई करदा फिकर। किसी जो अपणे ब्याह री, किसी जो रोटी कमाणे री, किसी जो अपणी करसाणिा री तां किसी जो अपणे बणज-बपारा री पऊरी। सच्च बोलदे ज होरसीं जो होर-बूड़ीया (तिसा जनानां रे नक्का च कोई गैह्वा नीं हुंदा) जो अपणे नक्का री। से बचारी सोचदी जे तिसा रे नक्का जो कोई कोका, तिल्ली या बालू देई देंदा। अपणी धिऊआ रे सौह्रिए कितने बी खांदे-जिउंदे हुंगे पर प्योकिए तिस्सा रा घर भरने ते नी हटदे। बहाने-साने कुछ न कुछ देंदे रैहंदे। बऊ बचारी तरसदी रैंदी छाई जो बी घिऊआ जो दुद्ध घ्यू। घिऊआ जो नवें-नवें सूट कन्ने बहुआ जो त्वार ने टह्ल्लियां लगुरियां। अपणे घरा रीया लछमियां ने तित्थी जे एह्ड़ी बेन्याई हुंदी उत्थी कद्ही भल्याण नी हुंदा। स्याणयां नसीह्त दित्तुरी एह्ड़े प्योकियां जो भई रज्जुरिया घिऊआ जो नी देवा, भुखियां बउआ जो देणा।

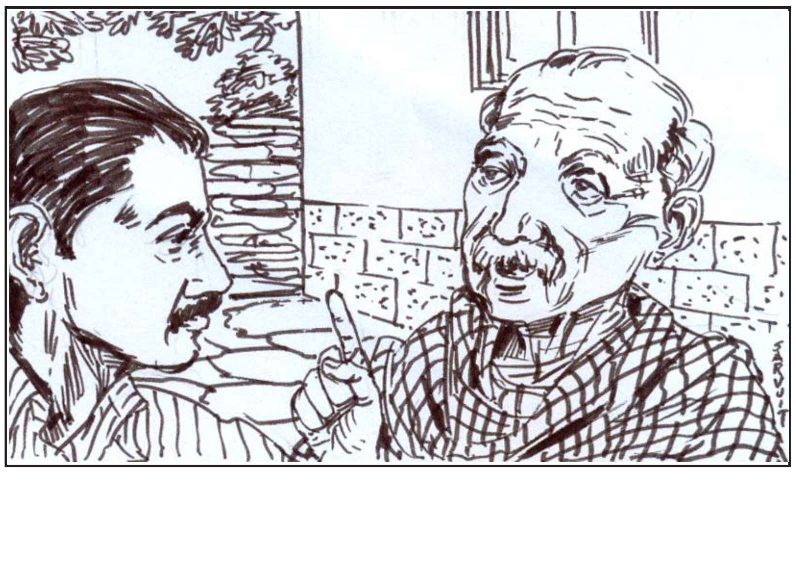

बाउनल में विधिक जागरूकता शिविर

हिमाचल प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के सौजन्य से संगड़ाह तहसील के ग्राम बाउनल में न्यायिक विभाग नाहन द्वारा विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता सिविल जज कनिष्ठ मण्डल नाहन श्री प्रताप सिंह ठाकुर ने की।

इस अवसर पर श्री प्रताप सिंह ठाकुर ने पात्र लोगों से नि:शुल्क कानूनी सहायता का लाभ उठाने का आग्रह किया। उन्होंने विधिक सेवा प्राधिकरण के गठन, कार्यविधि एवं उद्देश्य, किशोर अपराध व न्याय व्यवस्था, प्रसव पूर्व निदान तकनीक विनियमन और दुरूपयोग निवारण अधिनियम 1994 पर विस्तृत जानकारी दी।

इस अवसर पर बार एसोसिएशन के प्रधान अधिवक्ता श्री पीएस चौहान ने गिरफ्तार व्यक्ति के अधिकार व कर्तव्य तथा सूचना का अधिकार, वरिष्ठ अधिवक्ता श्री जेएस ठाकुर ने दिवानी मामले की प्रक्रिया, अनुसूचित जाति एवं जनजाति (उत्पीड़न एवं छुआछूत निवारण) अधिनियम, अधिवक्ता श्री आरएस तोमर ने दहेज निरोधक अधिनियम, घरेलू हिंसा से महिलाओं की सुरक्षा अधिनियम 2005, अधिवक्ता श्री दुर्गाराम ने मोटर दुर्घटना के शिकार व्यक्तियों को प्रतिकार तथा उपभोगता संरक्षण अधिनियम 1986, अधिवक्ता श्री कमजलीत शर्मा ने भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम 1988 के बारे में लोगों को विस्तार से जानकारी उपलब्ध करवाई।

इस मौके पर स्थानीय पंचायत प्रधान श्रीमती क्यादो देवी ने न्यायिक विभाग का इस प्रकार के शिविर लगाने के लिए धन्यवाद किया। हिमाचल प्रदेश विधिक सेवा आयोग प्रदेश के विभिन्न भागों में जागरूकता शिविर आयोजित कर लोगों को नि:शुल्क कानूनी सहायता एवं कानून के विभिन्न प्रावधानों बारे जानकारी देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

मुख्य मंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल शिमला में जन समस्याओं का निपटारा करते हुए

उठाऊ सिंचाई नवीनीकरण योजना तुंदल का शिलान्यास

स्वास्थ्य एवं आयुर्वेद मंत्री डा. राजीव बिंदल ने गत दिनों अपने सोलन विधानसभा प्रवास के दौरान कंडाघाट उपमंडल के तुंदल में 50 लाख रुपये की लागत से बनने वाली उठाऊ सिंचाई योजना तुंदल के नवीनीकरण का शिलान्यास किया। इस योजना के आरम्भ होने से इस क्षेत्र के 42.51 हेक्टेयर क्षेत्र को अतिरिक्त सिंचाई सुविधा मिलेगी।

स्वास्थ्य एवं आयुर्वेद मंत्री डा. राजीव बिंदल ने इस अवसर पर जनसभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि सोलन जिला शैक्षिक और औद्योगिक गतिविधियों के साथ ही परंपरागत रूप से कृषि विशेषकर बेमौसमी सब्जियों के उत्पादन में प्रदेश में अग्रणी स्थान पर है।

उन्होंने कहा कि कंडाघाट क्षेत्र में बेमौसमी सब्जियों का प्रचुर मात्रा में उत्पादन होता है। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र में कृषि उत्पादन के महत्व को ध्यान में रखकर सड़कों का निर्माण किया जा रहा है ताकि किसान बिना विलंब के अपने उत्पाद को मंडी तक पहुंचा सके।

उन्होंने बताया कि साधुपुल क्षेत्र में डैम साइड से बिशा तक सड़क को पक्का करने के लिए 2.05 करोड़ रुपये, कहलोग–बाशा सड़क को पक्का करने के लिए चार करोड़ तथा कैथली घाट–बाशा सड़क की 1.60 करोड़ की डीपीआर तैयार कर सरकार को स्वीकृति के लिए भेजी गई है।

उन्होंने कहा कि कृषि की तरह ही पशुपालन भी किसानों की आर्थिकी की रीढ़ है। मुख्यमंत्री अरोग्य पशुधन योजना के तहत पूरे प्रदेश में 1272 पशु चिकित्सालय खोले जा रहे हैं ताकि प्रदेश की सभी पंचायतों में कम से कम एक पशु चिकित्सालय उपलब्ध हो सके। और किसानों को इसका लाभ मिल सके।

स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि महान संतो के सान्निध्य में मनुष्य के ज्ञान और विवेक में वृद्धि होती है जिससे समाज में उसकी प्रतिष्ठा और मान में भी बढ़ोतरी होती है।

जिला भाजपा महासचिव लोकेश्वर शर्मा ने इस अवसर पर वर्तमान सरकार द्वारा सड़क, शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में किए गए कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि इन चार वर्षो में इस क्षेत्र में अभूतपूर्व विकास कार्य हुए हैं।

उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र के लोगों ने वर्तमान सरकार के कार्यकाल के दौरान ही यह जाना कि सरकारी योजनाएं ग्रामीण क्षेत्र की समाजिक और आर्थिक दशा को कैसे परिवर्तित कर सकती है।

इससे पूर्व कृष्णानंद शास्त्री ने स्वास्थ्य मंत्री का स्वागत किया और स्थानीय समस्याओं के बारे में जानकारी दी।

इस अवसर पर जिला परिषद अध्यक्ष कुमारी शीला, किसान मोर्चा अध्यक्ष रामेश्वर कौशिक, बीडीसी अध्यक्ष नंदराम कश्यप, जिला परिषद सदस्य धर्म सिंह, प्रधान ग्राम पंचायत तुदंल कुंजा देवी, उप प्रधान प्रवीण ठाकुर, तहसीदार एन.के. आहलुवालिया तथा अन्य गणमान्य लोग भी उपस्थित थे।

चिनाब नदी पर ...

(पृष्ठ एक का शेष) का दोहन हो पाया है। हजारों मेगावाट क्षमता की परियोजनाओं का कार्य पूरा होने वाला है और यदि सीआईए अध्ययन की शर्त लगाई गई तो इनके निष्पादन में अनावश्यक देरी होगी।

प्रो. धूमल ने पत्र में लिखा है कि सतलुज बेसिन के लिए सीआईए अध्ययन प्रगति पर है तथा चिनाब बेसिन के लिए संदर्भ की शर्तें वन परामर्श समिति की स्वीकृति के लिए लम्बित हैं। उन्होंने कहा कि अन्य तीन बेसिन के लिए संदर्भ की शर्तें तैयारी के अंतिम चरण में हैं, जिसके बाद कार्यान्वयन प्रक्रिया में तेजी आएगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश की कुल जल विद्युत क्षमता के पूर्ण दोहन से हिमाचल प्रदेश गर्मी के मौसम में उत्तरी राज्यों की ऊर्जा सम्बन्धी मांगे पूरी करने में सक्षम होगा। गर्मी के मौसम में बिजली की खपत में काफी वृद्धि हो जाती है। प्रदेश की जल विद्युत क्षमता का शीघ्र दोहन समग्र रूप से राष्ट्र के हित में है। उन्होंने केन्द्रीय राज्य मंत्री से मांग की है कि सम्बन्धित अधिकारियों को निर्देश दिए जाएं कि चिनाब नदी प्रणाली के लिए आने वाले नवीन प्रस्तावों की स्वीकृति पर सीआईए अध्ययन शर्त लागू न की जाए।

नाबार्ड कृषि क्षेत्र के ऋण प्रवाह...

(पृष्ठ एक का शेष) राज्य में बैंकिंग प्रणाली के माध्यम से ऋण आवाजाही के लिए उपलब्ध क्षमता पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है। इसमें कृषि क्षेत्र पर विशेष ध्यान दिया गया है। उन्होंने कहा कि अधोसंरचना में सिंचाई, सड़क, पशुपालन और मत्स्य इत्यादि क्षेत्रों में कमियों को चिन्हित किया गया है और बैंकों तथा विभागों के लिए कार्य सूची समाहित की गई है। इसके कार्यान्वयन से प्राथमिक क्षेत्रों में बैंकों की ऋण आवाजाही में वृद्धि होगी। यह स्टेट फोक्स पेपर बैंकों द्वारा राज्य के लिए वर्ष 2012–13 के लिए तैयार की जाने वाली वार्षिक ऋण योजना का आधार बनेगा। उन्होंने कहा कि स्टेट फोक्स पेपर राज्य की सभी जिलों की क्षमता योजनाओं पर आधारित है। इसमें कृषि क्षेत्र में फसल ऋण की उच्च क्षमता को चिन्हित किया गया है, जो कि 1741.81 करोड़ अर्थात कृषि क्षेत्र की क्षमता का 54.24 प्रतिशत है। यह सब बैंकों द्वारा अधिक से अधिक कार्ड जारी करने के कारण संभव हुआ है। उन्होंने कहा कि कृषि क्षेत्र में विभिन्न निवेश ऋण गतिविधियों के लिए अवधि ऋण के रूप में 1469.16 करोड़ रुपये चिन्हित किए गए हैं, जो कि वर्ष 2011–12 की वार्षिक ऋण योजना के लिए तय किए गए लक्ष्य से 33 प्रतिशत अधिक हैं। उन्होंने बैंकों को सलाह दी कि ऋण जमा अनुपात में वृद्धि सबसे बड़ी चुनौती है। उन्होंने स्टेट फोक्स पेपर पर जानकारी दी। विभिन्न विभागों के अध्यक्ष, राज्य सरकार के वरिष्ठ अधिकारी, आरबीआई, नाबार्ड, एसएलबीसी, बैंकों, सहकारी बैंकों और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों के प्रतिनिधियों ने बैठक में भाग लिया।

यूको बैंक के महाप्रबन्धक तथा एसएलबीसी के समन्वयक श्री वैंकटरमण ने भी इस अवसर पर अपने विचार रखे। उप मुख्य प्रबन्धक श्री के.के. सेक्सेना ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

मानसिक स्वास्थ्य अधिनियम 1987 के तहत् जागरूकता कार्यशाला का आयोजन

उपायुक्त सिरमौर श्रीमती मीरा मोहन्ती ने आम जनता से अपील की कि मानसिक रोगियों की सहायता के लिए आगे आएं ताकि वह भी समाज की मुख्यधारा में शामिल हो सकें। श्रीमती मोहन्ती नाहन में मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम तथा मानसिक स्वास्थ्य अधिनियम 1987 के तहत एक दिवसीय जागरूकता कार्यशाला में बतौर मुख्यातिथि बोल रही थीं।

उन्होंने कहा कि ज़िला प्रशासन, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग तथा पुलिस विभाग मानसिक रोगियों के उपचार के लिए संयुक्त रूप से प्रयास करें तथा उनकी दवाई इत्यादि पर होने वाले व्यय को रोगी कल्याण समिति तथा स्थानीय रेडक्रास सोसायटी से वहन करें।

उपायुक्त ने सभी अभिभावकों से भी अपील की कि वह अपने बच्चों को पढ़ाई करते समय ज्यादा दबाव न डालें जिससे वह मानसिक रूप से स्वतंत्र रहकर पढ़ाई इत्यादि कर सकें। उन्होंने कहा कि प्राय: अभिभावको के दबाव के कारण ही बच्चे मानसिक रोग का शिकार हो जाते हैं। श्रीमती मोहन्ती ने ज़िला में मानसिक रोगियों को पढ़ाने हेतू चलाए जा रहे आस्था स्कूल के लिए पर्याप्त धन दिये जाने का आह्वान किया ताकि यह स्कूल बच्चों की पढ़ाई की व्यवस्था समुचित रूप से कर सके।

उपायुक्त ने बताया कि सभी सरकारी कार्यालयों, शिक्षण संस्थाओं, सार्वजनिक स्थानों, चिकित्सालयों इत्यादि को धूम्रपान वर्जित क्षेत्र घोषित किया गया है। शीघ्र ही ज़िला के उड़न दस्ते इन स्थानों पर छापे मारकर धूम्रपान करने वाले लोगों के चालान काटकर उनसे जुर्माना वसूल करेगा। उन्होंने सभी कार्यालयाध्यक्षों को निर्देश दिये कि अपने कार्यालय में अगले दस दिनों के भीतर धूम्रपान वर्जित क्षेत्र का बोर्ड लगाते हुए इस कानून को लागू करने वाली कमेटियों का गठन करें।

राज्य मानसिक रोगी कार्यक्रम संचालन के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. गोपाल चौहान ने बताया कि वर्तमान में प्रदेश में कांगड़ा तथा शिमला में मानसिक ओपीडी लगती है। राज्य के शिमला में मानसिक रोगियों के लिए 50 बिस्तर वाला अस्पताल तथा निजी क्षेत्र में सोलन के धर्मपुर में 40 बिस्तरों वाला चिकित्सालय है। उन्होंने बताया कि उच्च न्यायालय के निर्देशानुसार हर ज़िला के मुख्य चिकित्सालय में मानसिक रोगियों के लिए तीन बिस्तरों का प्रावधान किया गया है जिनकी दवाइयों इत्यादि पर होने वाला सारा खर्च स्थानीय रोगी कल्याण समिति तथा रेडक्रास द्वारा किया जायेगा।

...विशेष आर्थिक पैकेज की मांग

(पृष्ठ एक का शेष) हल नहीं निकला है। उन्होंने केन्द्र सरकार से आग्रह किया कि हिमाचल प्रदेश को विशेष आर्थिक पैकेज प्रदान किया जाए ताकि विभिन्न केन्द्रीय मंत्रलयों द्वारा हिमाचल प्रदेश के साथ किए जा रहे पक्षपाती रवैये के कारण हो रहे घाटे की भरपाई की जा सके।

पूर्व विधायक ईश्वर चंद के निधन पर शोक व्यक्त

मुख्यमंत्री प्रो. प्रेम कुमार धूमल ने पूर्व विधायक श्री ईश्वर चंद के निधन पर शोक प्रकट किया है, जिनका हाल ही में कांगड़ा जिले के देहरा में निधन हो गया था।

प्रो. धूमल ने शोकसंतप्त परिवार के प्रति अपनी संवेदनाएं प्रकट करते हुए कहा कि श्री ईश्वर चंद एक ईमानदार व्यक्ति थे और लोगों की सेवा के लिए हमेशा समर्पित रहे। उन्होंने कहा कि उनकी सेवाओं को क्षेत्र के लोग हमेशा याद रखेंगे।

उन्होंने परमपिता परमेश्वर से दिवंगत आत्मा की शांति तथा शोक संतप्त परिवार को इस असहनीय दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की।

औद्योगिक क्षेत्रों में विकास कार्यों के लिए ₹2.50 करोड़

सिरमौर जिले में उद्योगों से संबंधित शिकायत निवारण समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में कालाअम्ब तथा पांवटा औद्योगिक क्षेत्र से संबंधित बिजली, पानी, सड़क, ईएसआई, ई–फाइलिंग, दूरभाष तथा फायर स्टेशन से संबंधित समस्याओं पर विस्तृत चर्चा हुई। पांवटा औद्योगिक क्षेत्र के गोंदपुर तथ्ना कालाअम्ब क्षेत्र में सड़क मरम्मत, रखरखाव, बरसाती पानी की निकासी के लिए 104 लाख रुपये, तारूवाला, गोंदपुर पेयजल संवर्धन योजन पर 68 लाख, कालाअम्ब बैरियर के जीर्णोद्धार के लिए 10 लाख, खैरी–मीरपुर कोटाला मार्ग के लिए 2.32 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। बैठक की अध्यक्षता श्रीमती मीरा मोहन्ती ने की।

शिशु मृत्यु दर घटी

(पृष्ठ एक का शेष) ग्रामीण क्षेत्रों में भी शिशु मृत्यु दर राज्य के आंकड़ों के मुकाबले कम है।

प्रदेश में संस्थागत प्रसव की जानकारी देते हुए स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि राज्य में यह 70 प्रतिशत तक बढ़ी है। राज्य सरकार द्वारा किए जा रहे विभिन्न प्रयासों के कारण प्रदेश में कन्या भ्रूण हत्या के मामलों में कमी दर्ज की गई है। 'बेटी है अनमोल' योजना के सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं तथा इस योजना से कन्या भ्रूण हत्या में कमी दर्ज की गई है। उन्होंने कहा कि प्रदेश के सरकारी अस्पतालों में मां और नवजात शिशु को जन्म से लेकर एक वर्ष तक नि:शुल्क चिकित्सा सेवा उपलब्ध करवाई जा रही है। प्रदेश के सरकारी अस्पतालों में नि:शुल्क संस्थागत प्रसव की सुविधा प्रदान की जा रही है। डा. राजीव बिंदल ने कहा कि राज्य सरकार को विशेष पैकेज उपलब्ध करवाया जाना चाहिए क्योंकि प्रदेश में शिशु मृत्यु दर में सर्वाधिक कमी दर्ज की गई है और राज्य में राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन सफलतापूर्वक कार्यान्वित किया जा रहा है।

डा. बिन्दल ने केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री से भेंट कर उनसे प्रदेश को विशेष पैकेज शीघ्र जारी करने का आग्रह किया ताकि राज्य में चलाई जा रही विभिन्न स्वास्थ्य योजनाओं से अधिक से अधिक लोग लाभान्वित हो सकें।

डाक पंजीकरण संख्या : एच.पी./42/एस.एम.एल. 2012-14 साप्ताहिक आर.एन.आई. 32195/78

निजी क्षेत्र में 4755 युवाओं को रोजगार

प्रदेश में चार वर्षों के दौरान निजी क्षेत्र में 3469 औद्योगिक इकाईयां स्थापित की जा चुकी है जिनमें 4755 लोगों को रोजगार मिला है।

यह जानकारी लोक निर्माण एवं राजस्व मंत्री, ठाकुर गुलाब सिंह ने गंगथ विधानसभा क्षेत्र के डमटाल में चाहल टायर वर्ल्ड प्राईवेट लिमिटेड यूनिट-2 तथा सूरजपुर में एमआरएफ शो रूम का उद्घाटन करने के उपरांत जनसभा को संबोधित करते हुए दी। उन्होंने बताया कि डमटाल में स्थापित इस प्राईवेट लिमिटेड में 100 बेरोजगार युवाओं को रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे। उन्होंने बताया कि प्रदेश में स्थापित की जा रही औद्योगिक इकाईयों में प्रदेश के युवाओं को 70 प्रतिशत रोजगार सुनिश्चित किया जा रहा है।

सोलन जिले के लिए 18 करोड़ की स्वास्थ्य योजना स्वीकृत

स्वास्थ्य एवं आयुर्वेद मंत्री डा. राजीव बिंदल ने कहा है कि स्वास्थ्य सेवाओं में गुणात्मक सुधार तथा घर-द्वार तक स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार प्रदेश सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में शामिल है।

स्वास्थ्य एवं आयुर्वेद मंत्री डा. राजीव बिंदल गत दिनों सोलन में सोलन जिला के लिए वर्ष 2012-13 की 'जिला स्वास्थ्य योजना' की बैठक की अध्यक्षता कर रहे थे। उन्होंने बताया कि जिला के लिए 18 करोड़ रुपये की जिला स्वास्थ्य योजना को स्वीकृति प्रदान की गई है। उन्होंने कहा कि मुख्य मंत्री विद्यार्थी स्वास्थ्य कार्यक्रम के तहत प्रदेश में इस वर्ष 5.50 लाख विद्यार्थियों के स्वास्थ्य की जांच की गई है। उन्होंने बताया कि सोलन जिला में भी यह योजना प्रभावी ढंग से कार्यान्वित की जा रही है तथा इस योजना पर आगामी वर्ष 39 लाख रुपये की धनराशि व्यय करना प्रस्तावित है।

114 गांवों को मिली सड़क सुविधा

सड़कों के निर्माण एवं रख-रखाव पर शिमला जिला में पिछले 4 वर्षों में 215 करोड़ रुपये की राशि खर्च की गई है। यह जानकारी मुख्य संसदीय सचिव श्री विरेन्द्र कंवर ने गत दिनों शिमला से करीब 20 कि.मी. दूर नेहरा-गणेवग एवं घणाहट्टी पंचायतों में साढ़े तेरह लाख रुपये की लागत से निर्मित 2 कि. मी. नेहरा शोल्टु तथा 15 लाख रुपये की लागत से बनी 3 कि.मी. घरोग-कनोई सम्पर्क मार्ग का लोकार्पण करने के बाद नेहरा में आयोजित जनसभाओं को सम्बोधित करते हुए दी।

उन्होंने कहा कि जिला शिमला में पिछले 4 वर्षों में करीब 450 कि.मी. सड़कों का निर्माण करके 114 गांव को सम्पर्क मार्गों से जोड़ा गया है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार द्वारा ढाई सौ से ज्यादा आबादी वाले गांव को वर्ष 2012 के अन्त तक सड़कों से जोड़ने का प्रयास किया जायेगा। उन्होंने बताया कि जिला शिमला में भी ढाई सौ से ज्यादा आबादी वाले करीब 510 गांव में से 385 गांव को सड़कों से जोड़ा जा चुका है। उन्होंने बताया कि जिन क्षेत्रों में लोग सड़क निर्माण में अपनी भूमि देने के लिए आगे आ रहे हैं उन गांव को सम्पर्क मार्गों से जोड़ने के लिए प्राथमिकता दी जा रही है।

श्री कंवर ने उच्च पाठशाला नेहरा के लिए 2 कमरों के अतिरिक्त निर्माण के लिए उचित धन राशि देने तथा अन्य समस्याओं को पूरा करने का आश्वासन दिया। उन्होंने घरोग-नालटा-जाबरी सड़क का निर्माण गंतव्य स्थल तक पूरा करने के लिए लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों को सभी औपचारिकताएं पूरा करने को कहा।

शिमला में बर्फबारी का मनोरम दृश्य।

इस वर्ष शिक्षकों के भरे जायेंगे छः हजार पद

हिमाचल प्रदेश में पिछले चार वर्षों के दौरान शिक्षकों की विभिन्न श्रेणियों के 19 हजार 251 पद भरे गए हैं जिनमें सीएण्डवी श्रेणी के 1000 पद भी शामिल हैं। इसके अलावा शिक्षा विभाग में 6 हजार पदोन्नतियां की गई हैं। इस वर्ष भी शिक्षा विभाग में 6 हजार और पद भरे जायेंगें जिनमें सीएण्डवी शिक्षकों के 1370 पद शामिल होंगे।

यह जानकारी शिक्षा मंत्री श्री आई. डी. धीमान ने गत दिनों ऊना में आयोजित हिमाचल प्रदेश राजकीय क्लासीकल एवं वर्नेकुलर अध्यापक संघ के राज्य स्तरीय महाधिवेशन की अध्यक्षता करते हुए दी।

उन्होंने कहा सीएण्डवी शिक्षक शिक्षा विभाग में एक कड़ी का काम करते हैं और इनकी सराहनीय सेवाओं के दृष्टिगत सरकार ने इनकी मांगों के प्रति सदैव सकारात्मक रवैया अपनाया है। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश देश का पहला ऐसा राज्य है जहां इस श्रेणी के शिक्षकों को पूर्व भाजपा सरकार के कार्यकाल में दो विशेष वेतन वृद्धियां दी गई थीं और प्रदेश में नया वेतनमान लागू होने के बाद सीएण्डवी की जो दो वेतनवृद्धियां रूक गई थीं, उन्हें भी बहाल करवाया गया है।

उन्होंने कहा सरकार का प्रयास हिमाचल प्रदेश को 'शिक्षा का हब' के रूप में विकसित करना है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्रदेश में स्तरीय शिक्षण संस्थान स्थापित किए जा रहे हैं।

श्री धीमान ने कहा कि गत चार वर्षों में 96 मिडल स्कूलों को हाई, 75 हाई स्कूल को वरिष्ठ माध्यमिक किया गया है तथा सिरमौर जिला के हरिपुरधार में एक डिग्री कालेज खोला गया है। एक सैन्ट्रल यूनिवर्सिटी स्थापित की गई है, एक तकनीकी विश्वविद्यालय खोला गया है और 11 निजी विश्वविद्यालय स्थापित किए गए हैं। उन्होंने कहा कि प्रदेश में 628 स्कूलों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी परियोजना आरंभ की गई है। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश में अटल विद्यालय यूनिफार्म योजना आरम्भ की गई है जिसके तहत सभी सरकारी स्कूलों के पहली से दसवीं कक्षा तक में पढ़ने वाले दस लाख छात्रों को निःशुल्क दो जोड़े स्कूल यूनिफार्म के उपलब्ध करवाए जाएंगे। इससे अमीर तथा गरीब के मध्य की खाई को पाटने में सहायता मिलेगी और सभी शिक्षण संस्थानों में समानता आएगी।

शिक्षा पर कुल बजट का 19 प्रतिशत व्यय

प्रदेश सरकार के कुल बजट का 19 प्रतिशत महत्वपूर्ण क्षेत्र शिक्षा पर खर्च किया जा रहा है ताकि हिमाचल प्रदेश को शिक्षा हब के रुप में विकसित किया जा सके और युवाओं को राज्य में ही तकनीकी एवं व्यावसायिक शिक्षा सुलभ हो सके।

यह जानकारी गत दिनों विधान सभा उपाध्यक्ष श्री रिखी राम कौंडल ने घण्डीर वरिष्ठ माध्यमिक पाठशाला के वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह की अध्यक्षता करते हुए दी। उन्होंने कहा कि राज्य की साक्षरता दर 83.78 प्रतिशत पहुंच गई है, जो 74.04 प्रतिशत की राष्ट्रीय साक्षरता दर से कहीं अधिक है।

उन्होंने कहा कि प्रदेश में 6 से 14 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों की स्कूलों में दाखिला दर 99.7 प्रतिशत है तथा ड्राप आउट दर घट कर 0.3 प्रतिशत रह गई है। उन्होंने बताया कि प्रदेश में चयनित 968 वरिष्ठ माध्यमिक पाठशालाओं में सूचना एवं प्रौद्योगिकी विषय पढाया जा रहा है और 628 स्कूलों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी परियोजना आरम्भ की गई है।

'सिविल सर्विस पुरस्कार' के लिए आवेदन की अवधि 15 फरवरी तक बढ़ी

राज्य सरकार द्वारा प्रदेश के सरकारी कर्मचारियों व कर्मचारी समूह को प्रदान किए जाने वाले 'सिविल सर्विस पुरस्कार' के लिए आवेदन की तिथि 15 फरवरी, 2012 तक बढ़ा दी गई है।

इस पुरस्कार के लिए पात्र कर्मचारियों के नामांकन तथा संस्तुत व्यक्तियों की अनुशंसा निर्धारित प्रपत्र पर भेजनी होगी। आवेदन पत्र के साथ मनोनीत व्यक्ति की जानकारी हिन्दी में देनी होगी। यह पुरस्कार मुख्य मंत्री द्वारा उत्कृष्ट कर्मचारियों/कर्मचारियों के समूह को हर वर्ष 15 अप्रैल को दिए जाते हैं। इस योजना के अन्तर्गत प्रत्येक वर्ष चार पुरस्कार दिए जाते हैं।

इन पुरस्कारों के लिए नामांकन का चयन मुख्य सचिव की अध्यक्षता में गठित एक राज्य स्तरीय समिति द्वारा किया जाता है। मुख्य मंत्री के प्रधान सचिव एवं प्रधान सचिव वित्त समिति के सदस्य तथा एक प्रबुद्ध नागरिक अथवा सेवानिवृत्त प्रशासनिक अधिकारी इस समिति के गैर सरकारी सदस्य होते हैं। सम्बन्धित प्रशासनिक सचिव समिति के विशेष आमंत्रित सदस्य हैं, जबकि सचिव सामान्य प्रशासन सदस्य सचिव हैं।

योजना के तहत राज्य सरकार द्वारा

15 अप्रैल को दिये जायेंगे पुरस्कार

ऐसे लोगों और संगठनों को 'प्रेरणा स्रोत' सम्मान प्रदान किए जाते हैं, जो अपने-अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य कर रहे हैं और लोक हितैषी कार्यों में योगदान दे रहे हैं। इस पुरस्कार के तहत व्यक्तिगत स्तर पर पुरस्कार पाने वाले व्यक्ति को 51 हजार रुपये का नगद पुरस्कार ईनाम, हिमाचली शॉल और टोपी तथा प्रशस्ति पत्र और गैर सरकारी संस्था/संगठन को 2 लाख 50 हजार रुपये का नकद पुरस्कार, प्रशस्ति पत्र तथा संस्था के प्रतिनिधि को हिमाचली शॉल व टोपी प्रदान की जाती है।

राज्य सरकार द्वारा सशस्त्र बलों, पुलिस बल और मान्यता प्राप्त अग्निशमन सेवाओं में कार्यरत व्यक्तियों को अपने कार्य के दौरान बहादुरी के कार्य और किसी की जान बचाने के लिए 'हिमाचल गौरव पुरस्कार' प्रदान किए जाते हैं।

यह पुरस्कार मरणोपरांत भी प्रदान किए जाते हैं। इस योजना के तहत एक वर्ष में चार पुरस्कार प्रदान किए जाते हैं। पुरस्कार के तहत 21 हजार रुपये का नगद ईनाम, हिमाचली शॉल और टोपी तथा प्रशस्ति पत्र प्रदान किया जाता है।

यह जानकारी राज्य सरकार के एक प्रवक्ता ने गत दिनों शिमला में दी।

व्यावसायिक गतिविधियों में विस्तार करने का परामर्श

हिमाचल प्रदेश सामान्य उद्योग निगम द्वारा तैयार फर्नीचर तथा अन्य उत्पादों की बाजार में मांग को देखते हुए इन्हें गुणवत्तायुक्त, आकर्षक एवं आरामदेह बनाया जा रहा है, जिससे ये उत्पाद और लोकप्रिय बन सकें और इनके विक्रय से निगम की आय में बढ़ोतरी हो। यह जानकारी उद्योग मंत्री श्री किशन कपूर ने गत दिनों शिमला में आयोजित हिमाचल प्रदेश सामान्य उद्योग निगम के निदेशक मण्डल की बैठक की अध्यक्षता करते हुए दी। उन्होंने अधिकारियों को निगम की व्यावसायिक गतिविधियों में विस्तार लाने के लिए रेट कॉन्ट्रैक्ट स्पर्धा में शामिल होने का परामर्श दिया। उन्होंने कहा कि निगम को बाजार की मांग के अनुरूप फर्नीचर निर्माण में नवीनता एवं विविधता लानी चाहिए ताकि निगम की आय को बढ़ाया जा सके।

श्री कपूर ने निगम उत्पादों के आपूर्ति नेटवर्क को सुदृढ़ करने पर बल देते हुए कहा कि उत्पादों के डिजाइनों में हर वर्ष बदलाव लाकर नया लॉट तैयार करना चाहिए, इससे उत्पादों में नयापन व विविधा होगी। उन्होंने कहा कि इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए निगम के कर्मचारियों एवं अन्य श्रम-शक्ति को प्रशिक्षण प्रदान कर दक्षता को अप-ग्रेड किया जाना चाहिए। प्रधान सचिव उद्योग श्री अजय त्यागी ने भी अधिकारियों को निगमों के उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार लाने की आवश्यकता पर बल दिया।

जदरांगल पंचायत में खुला दरबार आयोजित

धर्मशाला क्षेत्र के खनियारा और जदरांगल पंचायतों में पेयजल एवं सिंचाई योजनाओं पर 5.19 करोड़ की राशि व्यय की जाएगी। यह जानकारी उद्योग, श्रम एवं रोजगार कल्याण मंत्री श्री किशन कपूर ने जदरांगल पंचायत में आयोजित खुला दरबार में लोगों की समस्याएं सुनने के उपरांत एक जनसभा को संबोधित करते हुए दी। इससे पहले श्री किशन कपूर ने सौकणी दा कोट पंचायत में भी लोगों की समस्याएं सुनीं। श्री कपूर ने बताया कि खनियारा क्षेत्र में सिंचाई की सुविधा के लिए 2.37 करोड़ से चार कूहलों का निर्माण कार्य आरंभ हो चुका है जबकि जदरांगल क्षेत्र में 1.58 करोड़ की पेयजल योजना स्वीकृत की गई है इससे करीब 11 गांवों के लोगों को पेयजल की बेहतर सुविधा उपलब्ध होगी। इसके अतिरिक्त एक करोड़ की निर्जुल कूहल और 26 लाख की नागनी कूहल को भी स्वीकृति प्रदान कर दी गई है।

प्रकाशकः बी.डी. शर्मा, निदेशक, सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, हि.प्र. शिमला-171002, मुद्रकः डी.डी. शर्मा, नियंत्रक, मुद्रण तथा लेखन सामग्री विभाग, शिमला-171005, फोनः 2830378, प्रधान सम्पादकः बी.डी. शर्मा, वरिष्ठ सम्पादकः यादविन्दर सिंह चौहान,
कार्यालयः हि.प्र. मुद्रणालय परिसर, शिमला-171005, फोन व फैक्सः 2633145, ई-मेलः girirajhp@gmail.com., girirajhp@yahoo.co.in OR girirajweekly 1978@yahoo.co.in प्राप्ति स्थानः गिरिराज कार्यालय। (गिरिराज साप्ताहिक में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचारों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं)